राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर द्वारा आयोजित

AKSHANSH PUBLICATION

राजस्थान हाई कोर्ट

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

9, जून 2025 को जारी विज्ञप्ति के अनुसार

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित गाइड बुक

सामान्य हिन्दी, राजस्थानी संस्कृति एवं बोलियां व सामान्य अंग्रेजी

आसान, सटीक एवं
संपूर्ण अध्ययन
अब एक ही पूस्तक से !

41 जिलों एवं 7 संभाग पर आधारित

प्रश्नों का व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

विशेषताएँ:

1. संपूर्ण पाठ्यक्रम एवं नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
2. परिक्षोपयोगी संभावित प्रश्नोतरों का संग्रह
3. NCERT & RBSE एवं शिक्षा विभाग के विभिन्न पोर्टल्स के सार का समावेश

नीरज जांगिड़ सर | मुकेश मारवाड़ी सर | मनीष मंगल सर

अक्षांश पब्लिकेशन

M. 6376957258, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर द्वारा आयोजित

AKSHANSH PUBLICATION

राजस्थान हाईकोर्ट चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

9, जून 2025 को जारी विज्ञप्ति के अनुसार

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित गाइड बुक

सामान्य हिन्दी, राजस्थानी संस्कृति एवं बोलियां व सामान्य अंग्रेजी

प्रश्नों का व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

संपादक
नीरज जांगिड़ सर, मुकेश मारवाड़ी सर, मनीष मंगल सर

सह संपादक
राजवर्धन बेगड़, गंगा सिंह, निशांत सोलंकी, विकास नाथ

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

MRP : ₹640

नोट :- अब लक्ष्य क्लासेज़ की सभी आगामी पुस्तकें केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के माध्यम से ही प्रकाशित की जाएंगी। ये सभी पुस्तकें बाजार में 'अक्षांश' नाम से ही उपलब्ध होंगी। विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आगामी समय में 'लक्ष्य' नाम से कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं की जाएगी। इसलिए कृपया पुस्तक खरीदते समय केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के नाम से प्रकाशित और अधिकृत पुस्तकें ही बुक स्टोर्स से प्राप्त करें, ताकि आपको प्रमाणिक, अद्यतन एवं परीक्षा-उपयुक्त सामग्री प्राप्त हो।भविष्य में 'लक्ष्य' नाम से प्रकाशित किसी भी पुस्तक की सामग्री या गुणवत्ता की जिम्मेदारी 'अक्षांश प्रकाशन' या 'लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर' की नहीं होगी।

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM INSTAGRAM YOUTUBE FACEBOOK WHATSAPP

बुक कोड - AP0006

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
lakshyaclassesudr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01 सामान्य हिन्दी

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	हिन्दी का सामान्य परिचय	1 – 4
2.	वाक्य विचार	5 – 9
3.	संज्ञा	10 – 13
4.	सर्वनाम	14 – 16
5.	क्रिया	17 – 19
6.	विशेषण	20 – 24
7.	तत्सम एवं तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्द	25 – 28
8.	संधि	29 – 41
9.	उपसर्ग	42 – 46
10.	प्रत्यय	47 – 57
11.	पर्यायवाची शब्द	58 – 63
12.	विलोम शब्द	64 – 74
13.	वाक्यांश के लिए एक शब्द	75 – 80
14.	शब्द शुद्धि	81 – 86
15.	वाक्य शुद्धि	87 – 90
16.	काल	91 – 94
17.	मुहावरे	95 – 103
18.	लोकोक्ति	104 – 112
19.	पारिभाषिक शब्दावली	113 – 121
20.	समानार्थक शब्द	122 – 125
21.	पत्रों से संबंधित ज्ञान	126 – 128

02 राजस्थान का इतिहास

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख राजवंश	130 – 146
2.	1857 की क्रांति	147 – 149
3.	किसान व जनजाति आंदोलन	150 – 152
4.	प्रजामंडल आंदोलन	153 – 154
5.	राजस्थान का एकीकरण	155 – 156

03 राजस्थान की कला एवं संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख दुर्ग	158 – 168
2.	महल एवं स्मारक	169 – 174

3.	हवेलियाँ, छतरियाँ एवं बावड़ियाँ	175 – 181
4.	मंदिर, मकबरे, मस्जिद, दरगाह	182 – 187
5.	मेले एवं त्योहार	188 – 193
6.	लोक कला एवं हस्तकला	194 – 202
7.	चित्रकला	203 – 208
8.	लोक गीत एवं संगीत	209 – 212
9.	लोक नृत्य एवं नाट्य	213 – 219
10.	लोक देवता एवं लोक देवियाँ	220 – 226
11.	संत-सम्प्रदाय एवं साहित्य	227 – 233
12.	आभूषण, वेशभूषा एवं खान – पान	234 - 241
13.	रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	242 – 247

04 राजस्थानी भाषा

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	249 – 251
2.	राजस्थानी साहित्य एवं साहित्यकार	252 – 260

05 राजस्थान का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	262 – 264
2.	भौतिक स्वरुप एवं विभाजन	265 – 271
3.	अपवाह तंत्र एवं झीलें	272 – 279
4.	वन एवं वन्यजीव	280 – 285
5.	मृदा	286 – 287
6.	पर्यटन स्थल एवं परिवहन	288 – 293
7.	जनसंख्या	294 - 298

06 GENERAL ENGLISH

S.No.	CHAPTER	PAGE NO.
1.	TENSES/SEQUENCE OF TENSES	300 – 310
2.	VOICE : ACTIVE AND PASSIVE	311 – 319
3.	NARRATION : DIRECT AND INDIRECT	320 – 329
4.	USE OF ARTICLES AND DETERMINERS	330 – 340
5.	USE OF PREPOSITIONS	341 – 345
6.	TRANSLATIONS OF SIMPLE SENTENCES	346 – 350
7.	GLOSSARY OF OFFICIAL, TECHNICAL TERMS	351 – 368
8.	TRANSFORMATION OF SENTENCES	369 – 371

सामान्य हिन्दी

- हिन्दी फ़ारसी/पारसी/ईरानी भाषा का शब्द है।
- सिन्धु नदी के पश्चिमी भाग में रहने वाले लोग स को ह उच्चारित करते थे और ध को द बोलते थे।
  इस प्रकार ईरानी लोग सिन्धु नदी को 'हिन्दु' नदी कहते थे, सिंधु नदी के पूर्व में रहने वाले भारतीय लोगों को हिन्दू कहते थे। आर्यों की भाषा हिन्दी कहलायी तथा सिन्धु नदी के पूर्व का भाग हिन्दुस्तान (सिन्धु + स्थान) कहलाया।
  सिन्धु - हिन्दु - हिन्दू - हिन्दी - हिन्दुस्तान
- भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास को तीन कालों खंडों में बाँटा गया है–

(1) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा - 1500 ई. पू. - 500 ई.पू. तक
(2) मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा - 500 ई. पू. - 1000 ई. तक
(3) आधुनिक भारतीय आर्य भाषा - 1000 ई. - वर्तमान समय

संस्कृत

1. वैदिक संस्कृत (वेद, उपनिषद्) – 1500 ई. पू. - 1000 ई.पू.
2. लौकिक संस्कृत (रामायण, महाभारत) – 1000 ई.पू.- 500 ई.पू.

- **पालि** (बौद्ध ग्रंथ) - 500 ई.पू. - 1 ई.
- **प्राकृत** (जैन ग्रंथ) - 1 ई. - 500 ई.
- **अपभ्रंश** (शौरसेनी) - 500 ई. - 1000 ई.
- **हिन्दी** - 1000 ई. - वर्तमान समय
- हिन्दी का मानक समय - 1100 ई.

भाषा

- [भाष् (प्रकट करना) - संस्कृत]
- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपने मन के भाव और विचारों को प्रकट करने के लिए जिस माध्यम का प्रयोग करता है, उसे 'भाषा' कहते हैं।
  विशेष– राजस्थानी भाषा दिवस - **21 फरवरी**

हिन्दी भाषा दिवस - 14 सितंबर

- संविधान के **भाग-17 के अनुच्छेद 343 से 351** में हिन्दी के **राजभाषा** होने से संबंधित उल्लेख किया गया है।
- **विशेष–** वर्तमान समय में **12 अनुसूची और 22 भाषाओं** में हिन्दी का भी स्थान है लेकिन हिन्दी को कहीं भी राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान नहीं दिया गया है बल्कि राजभाषा के रूप में हिन्दी का उल्लेख किया गया है।

व्याकरण

- व्याकरण (वि + आ + करण) = 'भली भाँति समझना'
- व्याकरण एक ऐसा ग्रंथ है, जो किसी भाषा के शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन और शुद्ध प्रयोग का माध्यम होता है।
- व्याकरण के मूल रूप से तीन अंग होते हैं–
  (1) वर्ण विचार
  (2) शब्द विचार
  (3) वाक्य विचार
- भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
- लिखित रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
- मौखिक रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - ध्वनि
- अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - शब्द
- भावार्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - वाक्य

वर्ण विचार

- भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है। इसके और टुकड़े नहीं हो सकते। बोलने-सुनने में जो ध्वनि है, लिखने-पढ़ने में वह वर्ण है।
- वर्ण शब्द का प्रयोग ध्वनि और ध्वनि-चिह्न दोनों के लिए होता है। इस तरह वर्ण भाषा के मौखिक और लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। अतः हम वर्ण की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं- ‘वर्ण वह ध्वनि है जिसके और खंड नहीं किए जा सकते।’
- किसी भाषा के सभी वर्गों के व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह को उसकी वर्णमाला कहते हैं।
- उस मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके टुकड़े न हो सकें, जैसे- क् ख् ग् घ् आदि। इनके टुकड़े नहीं किये जा सकते। इन्हें अक्षर भी कहते हैं। अत: वर्ण या अक्षर भाषा की मूल ध्वनियों को कहते हैं। जैसे- ‘घट’ पद में घ् अ ट् अ ये मूल ध्वनियाँ हैं, जिन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं। इसी प्रकार अन्य पद भी समझिए, **जैसे**
  राम – र् + आ + म् + अ
  मोहन – म् + ओ + ह् + अ + न् + अ
  पुरुष – प् + उ + र् + उ + ष् + अ
  रमा – र् + अ + म् + आ
  गीता – ग् + ई + त् + आ

वर्ण के प्रकार

- हिंदी वर्णमाला में कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई हैं, जो निम्नानुसार है-

हिन्दी में कुल वर्णों की संख्या – 52				
स्वर **11**	**अयोगवाह** **2**	**व्यंजन** **33**	**संयुक्ताक्षर** **4**	**उत्क्षिप्त व्यंजन** **2**
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ	अं, अः	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, ट् ठ्, ड्, ढ्, ण्, त्, थ्, द्, ध्, न्, प्, फ्, ब्, भ्, म्, य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह्।	क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र्	ड़्, ढ़्

- ये वर्ण दो प्रकार के होते हैं-
  (I) स्वर (II) व्यंजन

I. स्वर (अच्) :

- जिन वर्णों या ध्वनियों का उच्चारण करने के लिए अन्य किसी वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती तथा जिन वर्गों के उच्चारण में हवा बिना किसी रुकावट के मुँह से बाहर आती है, स्वर कहलाते हैं।
- हिन्दी में स्वरों की संख्या 11 मानी गई हैं, ये हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ।

स्वरों की मात्राएँ

- 'अ' को छोड़कर प्रत्येक स्वर की मात्रा होती है। जब स्वरों का व्यंजनों के साथ प्रयोग किया जाता है, तो उनकी मात्राओं का ही प्रयोग किया जाता है।

स्वरों का वर्गीकरण –

- उच्चारण काल अथवा मात्रा के आधार पर स्वर निम्नलिखित तीन प्रकार के माने गये हैं-

1. ह्रस्व स्वर –

- जिन स्वरों के उच्चारण समय में केवल एक मात्रा का समय लगे अर्थात् कम से कम समय लगे, ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।
- **जैसे-** अ, इ, उ। इनकी संख्या 3 है।

2. दीर्घ स्वर –

- जिन स्वरों के उच्चारण समय में मूल स्वरों की अपेक्षा दुगुना समय, अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
- **जैसे –** आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ,। इनकी संख्या 8 है।
  नोट – ए, ओ, ऐ, औ ये मिश्रित स्वर हैं। ये दो स्वरों के मेल से बनते हैं।
  जैसे – अ + इ = ए
  अ + ए = ऐ
  अ + उ = ओ
  अ + ऊ = औ

3. प्लुत स्वर –

- जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। इनमें तीन मात्राओं का उच्चारण समय होता है। प्लुत का ज्ञान कराने के लिए ३ का अंक स्वर के आगे लगाते हैं। जैसे-अ ३, इ ३, उ ३, ऋ ३, लु ३, ए ३, ऐ ३, ओ ३, औ ३ !
- प्लुत स्वर का प्रयोग प्राय: दूर से बुलाने में किया जाता है।

अयोगवाह –

- हिन्दी में दो अयोगवाह ध्वनिया हैं- अं और अ:।
- अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) दोनों ध्वनियाँ न स्वर हैं और न व्यंजन। इन दोनों के साथ योग नहीं है; अतः ये अयोगवाह कहलाती है।

अनुनासिक –

- जो स्वर मुख और नाक से बोले जाते हैं, वे अनुनासिक स्वर कहलाते हैं। इनके ऊपर चंद्र-बिंदु (ँ) लगाया जाता है। नाक की सहायता से बोले जाने के कारण इन्हें 'अनुनासिक' कहा जाता है; जैसे-गाँव, पाँच।

अनुस्वार –

- जिस स्वर का उच्चारण करते समय हवा नाक से निकलती है और उच्चारण कुछ जोर से किया जाता है तथा लिखते समय व्यंजन के ऊपर (ं) लगाया जाता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे- कंठ, चंचल, मंच, अंधा, बंदर, कंधा।

II. व्यंजन

- जिन वर्गों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं। किसी व्यंजन का उच्चारण तभी किया जा सकता है, जब उसमें स्वर मिला हुआ हो। जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख विवर या स्वर तंत्र के किसी भाग से टकरा कर घर्षण करती हुई या रुक कर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन ध्वनियाँ कहते हैं।
- हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजन होते हैं। जैसे-क्, ख्, ग् आदि।
- इनका उच्चारण स्वर लगाकर ही किया जा सकता है, जैसे क् + अ = क, ख् + अ = ख, ग् + अ = ग। स्वर रहित व्यंजन को उसके नीचे हल् (्) चिह्न लगाकर लिखते हैं।

व्यंजनों का वर्गीकरण –

- प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के भेद-

(i) स्पर्श व्यंजन

क वर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
च वर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
ट वर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त वर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्
प वर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्

(ii) अंतस्थ व्यंजन – य्, र्, ल्, व्

(iii) ऊष्म व्यंजन – श्, ष, स्, ह्

- हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजनों के अतिरिक्त 4 संयुक्ताक्षर/संयुक्त व्यंजन और 2 उत्क्षिप्त व्यंजन भी होते हैं।

(iv) संयुक्ताक्षर/संयुक्त व्यंजन – क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र्

(v) उत्क्षिप्त व्यंजन – ड़, ढ़।

(vi) व्यंजन गुच्छ – दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से बने अक्षर को व्यंजन गुच्छ कहते हैं। ये निम्नलिखित रूप में होते हैं-

(क) संयुक्त व्यंजन – दो असमान व्यंजन संयुक्त होने पर अपना रूप बदल लेते हैं। जैसे – क् + ष् = क्ष्, ज् + ञ् = ज्ञ, श् + र् = श्र्, त् + र् = त्र्, द् + य् = द्य्।

(ख) 'र' के विशिष्ट रूप –

(i) जब 'र' (स्वर रहित) किसी व्यंजन से पहले आता है तो उस व्यंजन के शीर्ष पर स्थान पाता है। जैसे– धर्म, कर्म।

(ii) जब 'र' (स्वर रहित) किसी व्यंजन से पहले आता है। तो तिरक्षा (´) रूप या (ˆ) रूप धारण कर लेता है। **जैसे**-प् + थ + म = प्रथम, क् + र + म = क्रम, ड् + र + म = ड्रम, रा + ष् + ट् + र् = राष्ट्र।

(ग) द्वित्व व्यंजन – दो समान व्यंजनों का साथ-साथ प्रयुक्त होना द्वित्व कहलाता है। जैसे – बच्चा, बब्बू, कच्ची, सम्मान आदि।

– 'र' पर 'उ' तथा 'ऊ' की मात्रा

– 'र' पर 'उ' और 'ऊ' की मात्राएँ 'र' के नीचे नहीं बल्कि उसके सामने लगाई जाती हैं; जैसे –

– र + उ = रु ; र + ऊ = रू

अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर

– उच्चारण करते समय जब वायु मुख के साथ-साथ नासिका से भी बाहर निकले, तो ऐसे स्वर अनुनासिक कहलाते हैं, जैसे- पाँच।

विसर्ग – विसर्ग (:) का प्रयोग केवल संस्कृत के शब्दों में ही किया है; जैसे- अत:, प्रात:, अंतत:, फलत: आदि।

गृहीत ध्वनियाँ

– ऑ – इसका प्रयोग केवल अंग्रेजी के शब्दों में किया जाता है। यह 'आ' और 'ओ' के बीच की ध्वनि है।
जैसे—बॉल, कॉल, हॉल, डॉक्टर, डॉल आदि।

– 'ज़' और 'फ़'– इनका प्रयोग केवल अरबी-फारसी के शब्दों में किया जाता है; जैसे-कागज, सजा, जरा, शरीफ़, कफ़न, नफ़रत आदि।

– **विशेष-** 'ड़' और 'ढ़' ध्वनियाँ 'ड' और ढ' से भिन्न हैं। ये दोनों कभी शब्द के प्रारंभ में नहीं आती।

अन्य आधार पर व्यंजनों के भेद

(क) स्वर-तंत्रियों की स्थिति और कंपन के आधार पर :

1. घोष –

– जिन वर्गों के उच्चारण के समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु स्वर-तंत्रियों से टकराकर (नाद) घोष उत्पन्न करती है, वे घोष वर्ण कहलाते हैं। उदाहरणार्थ-प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ व्यंजन (ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, ण्, द्, ध्, न्, ब्, भ्, म्), अंत:स्थ व्यंजन (य्, र्, ल्, व्), 'ह्' एवं समस्त स्वरों अर्थात् अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ का 'घोष' प्रयत्न है।

2. अघोष –

– जिन वर्गों के उच्चारण में फेफड़ों से निकलने वाली वायु स्वर-तंत्रियों से बिना टकराये आसानी से निकल जाती है, वे अघोष वर्ण कहलाते हैं। उदाहरणार्थ-प्रत्येक वर्ग के पहले, दूसरे व्यंजन अर्थात् क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ् और श्, ष्, स् का 'अघोष' प्रयत्न है।

(ख) वायु प्रक्षेप की दृष्टि से :

1. अल्पप्राण –

– जिन वर्गों के उच्चारण में कम हवा (प्राण या श्वास) बाहर निकलती है, वे 'अल्पप्राण' कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ व्यंजन (क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ्, ट्, ड्, ण्, त्, द्, न्, प्, ब्, म्) य्, र्, ल्, व् तथा सभी स्वर अल्पप्राण हैं।

2. महाप्राण –

– जिन वर्गों के उच्चारण में अधिक हवा या श्वास बाहर निकलती है, वे महाप्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा व्यंजन (ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्), श्, ष्, स्, ह् तथा विसर्ग महाप्राण हैं।

वर्णों के उच्चारण स्थान

– फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख के विभिन्न भागों में जिह्वा (जीभ) का सहारा लेकर टकराती है, जिससे विभिन्न वर्णों का उच्चारण होता है। इस आधार पर वर्णों के निम्नलिखित उच्चारण स्थान हैं-

1. **कंठ (गला) –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ कंठ की ओर मुड़ती है, उनका उच्चारण स्थान 'कंठ' है – अ, आ, अ: तथा क वर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्) है। ये कंठ्य' वर्ण कहलाते हैं।
2. **तालु –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ तालु से स्पर्श करती है, उनका उच्चारण स्थान 'तालु' है – इ, ई, च वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्), य्, श्। इन्हें 'तालव्य' वर्ण कहा जाता है।
3. **मूर्द्धा –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ मूर्द्धा (दाँतों से ऊपर खुरदरी जगह) को स्पर्श करती है, उनका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है – ऋ, ट वर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र्, ष्। ये 'मूर्द्धन्य' वर्ण हैं।
4. **दंत –** जिन वर्णो के उच्चारण में जीभ दाँतों को स्पर्श करती है, उनका उच्चारण स्थान दंत है – त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्), ल्, स्। इन्हें 'दन्त्य' वर्ण कहते हैं।
5. **ओष्ठ –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ के सहयोग से ओष्ठ परस्पर मिलकर कार्य करते हैं, उन्हें 'ओष्ठ्य' कहते हैं – उ, ऊ, प वर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्)।
6. **नासिका –** प्रत्येक वर्ग के पञ्चमाक्षर के उच्चारण में नासिका भी सहायक होती है। इन वर्णों को 'नासिक्य' कहते हैं – अं, ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।
7. **कंठ-तालु** - जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ का सहयोग कंठ और तालु के साथ होता है, वे 'कंठ-तालव्य' वर्ण कहलाते हैं - ए, ऐ।

8. **कंठ-ओष्ठ** - जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ का सहयोग कंठ और ओष्ठ के साथ होता है, वे 'कंठोष्ठ्य' वर्ण कहलाते हैं – ओ, औ।
9. **दंत-ओष्ठ** - जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ का सहयोग दंत और ओष्ठ के साथ होता है, वे 'दंतोष्ठ्य' वर्ण कहलाते हैं – व्, फ्।
10. **स्वर यंत्र** – जिस वर्ण का उच्चारण स्थान स्वर यंत्र होता है, वह 'अलीजिह्वा' वर्ण कहलाता है – ह्।

वर्ण विच्छेद –

– शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। इसके ज्ञान द्वारा वर्तनी व उच्चारण की अशुद्धियों से बचा जा सकता है; जैसे-

अचानक – अ + च् + आ + न् + अ + क् + अ

स्वच्छ – स् + व् + अ + च् + छ् + अ

कमल – क् + अ + म् + अ + ल् + अ

अभ्यास प्रश्न

1. हिन्दी शब्द किस भाषा का शब्द है-
(a) अरबी (b) फारसी
(c) ईरानी (d) उपर्युक्त सभी

2. निम्नलिखित में से अर्द्धस्वर हैं-
(a) य, व (b) अ, इ
(c) आ, ई (d) ए, ऐ

3. अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है-
(a) वर्ण (b) ध्वनि
(c) शब्द (d) वाक्य

4. वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती, कहलाते हैं-
(a) स्वर (b) व्यंजन
(c) विसर्ग (d) अयोगवाह

5. निम्नलिखित में से 'अयोगवाह' वर्ण है-
(a) अ, आ (b) अं, अः
(c) अ, अः (d) आ, अं

6. 'ह' वर्ण का उच्चारण स्थान होता है-
(a) कंठ (b) काकल्य
(c) अलजिह्वा (d) उपर्युक्त सभी

7. निम्नलिखित में से अल्पप्राण वर्ण नहीं है-
(a) क, ज, ञ (b) च, ड, ण
(c) फ, ब, म (d) त, ब, न

8. निम्नलिखित में से घोष/सघोष वर्ण हैं-
(a) अ, ख, ब (b) ई, ख, फ
(c) ऊ, ज, ध (d) ए, थ, भ

9. यदि ऊपर के होंठ को काट दिया जाए तो किस वर्ण के उच्चारण में असुविधा होगी-
(a) व (b) ब
(c) व और ब दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

10. निम्नलिखित में से स्वर रहित 'र्' का उदाहरण है-
(a) क्रम (b) गृह
(c) ट्रक (d) आशीर्वाद

11. हिंदी में ध्वनियाँ कितने प्रकार की होती हैं?
(a) 2 (b) 4
(c) 6 (d) 8

12. 'र' का विवरण है-
(a) वर्त्स्य, लुंठित, सघोष, अल्पप्राण, व्यंजन
(b) वर्त्स्य, पार्श्विक, सघोष, महाप्राण, व्यंजन
(c) वर्त्स्य, संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण, व्यंजन
(d) वर्त्स्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण, व्यंजन

13. जब एक ध्वनि का द्वित्व हो जाए, तब वह क्या कहलाता है?
(a) संयुक्त ध्वनियाँ (b) युग्मक ध्वनियाँ
(c) संपृक्त ध्वनियाँ (d) पारस्परिक ध्वनियाँ

14. स्पर्श व्यंजन, कंठ्य ध्वनि, अघोष और महाप्राण ध्वनि हैं-
(a) क (b) ग
(c) ख (d) घ

15. अनुस्वार किसका कार्य करता है?
(a) विसर्ग का (b) चंद्रबिंदु का
(c) पंचम वर्ण का (d) स्वर का

16. निम्नलिखित शब्दों में से नवीन विकसित ध्वनियाँ कौन-सी है?
(a) ख़, ग़ (b) उ, ऊ
(c) ऐ, औ (d) श, स

17. किन ध्वनियों को 'अनुस्वार' कहा जाता है?
(a) स्वर के बाद में आने वाली नासिक्य ध्वनियाँ
(b) स्वतंत्र रूप से उच्चरित ध्वनियाँ
(c) स्वर के साथ आने वाली ध्वनियाँ
(d) व्यंजन के बाद में आने वाली ध्वनियाँ

18. किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?
(a) कृपा (b) कृष्ण
(c) दृष्टि (d) ग्रह

19. हिन्दी शब्दकोश में 'क्ष' का क्रम किस वर्ण के बाद आता है?
(a) क (b) छ
(c) त्र (d) ज्ञ

20. निम्नलिखित ध्वनियों में कौन-सी दंत्योष्ठ्य है?
(a) थ (b) फ
(c) म (d) व

ANSWER KEY

1. [b]	2. [a]	3. [c]	4. [a]	5. [b]
6. [d]	7. [c]	8. [c]	9. [b]	10. [d]
11. [a]	12. [a]	13. [b]	14. [c]	15. [c]
16. [a]	17. [a]	18. [d]	19. [a]	20. [d]

♦ ♦ ♦ ♦

राजस्थान का इतिहास

गुर्जर-प्रतिहार राजवंश

- **गुर्जर-प्रतिहार राजवंश (6वीं–12वीं सदी)**
- **प्रतिहारों** की स्थापना राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम (गुर्जरात्रा) में हुई।
- 'प्रतिहार' का अर्थ **द्वारपाल** है — इन्होंने लगभग **200 वर्षों तक अरब आक्रमणों का सफलतापूर्वक प्रतिरोध** किया।
- ये **लक्ष्मण (राम के द्वारपाल)** को अपना पूर्वज मानते थे, और **सूर्यवंशी/रघुवंशी** क्षत्रिय कहलाते थे।
- प्रमुख केंद्र: **मंडोर, भीनमाल, उज्जैन, कन्नौज**।
- **हरिश्चन्द्र (6वीं सदी)** ने मंडोर को राजधानी बनाकर वंश की नींव रखी; इन्हें आदिपुरुष कहा गया।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार: प्रतिहारों ने **6वीं से 11वीं सदी** तक अरबों के लिए बाधा का कार्य किया।
- **चालुक्य नरेश पुलकेशिन-द्वितीय के एहोल शिलालेख**, चंदेल शिलालेख व स्कन्द पुराण में गुर्जरों का उल्लेख।
- **मुहणोत नैणसी** ने इनकी **26 शाखाओं** का वर्णन किया।
- **बाणभट्ट की 'हर्षचरित'** में गुर्जरों का उल्लेख मिलता है।
- अरब यात्रियों (जैसे अलमसूदी) ने इन्हें **'जुर्ज'** व राजा को **'बोरा'** कहा।
- **मिहिरभोज** के ग्वालियर शिलालेख में प्रतिहारों को **विशुद्ध क्षत्रिय** कहा गया है।
- **महामारू शैली** के मंदिरों के संरक्षक रहे।
- **गौरीशंकर ओझा** ने इन्हें क्षत्रिय, जबकि **डॉ. भंडारकर** ने विदेशी माना।

मण्डोर के प्रतिहार

- **सबसे प्राचीन व प्रमुख शाखा: 26** शाखाओं में मण्डोर की प्रतिहार शाखा सर्वाधिक प्राचीन व महत्वपूर्ण मानी जाती है।
- **राजधानी:** मण्डोर, जिसे प्रतिहारों ने परकोटे से सुरक्षित किया।
- **प्रतिहार शब्द** का प्रयोग लक्ष्मण की उपाधि के आधार पर हुआ।

प्रमुख शासक व वंशावली

1. हरिश्चन्द्र
- गुर्जर-प्रतिहारों का आदिपुरुष या संस्थापक।
- दो पत्नियाँ: एक ब्राह्मण, दूसरी क्षत्रिय भद्रा।
- चार पुत्र: **भोगभट्ट, कदक, रज्जिल, दह**।
- घटियाला शिलालेख में वंश की जानकारी।

2. रज्जिल
- मण्डोर के आसपास विजय प्राप्त कर राजधानी बनाई।

3. नरभट्ट
- रज्जिल का पुत्र।
- ह्वेनसांग द्वारा 'पेल्लोपेल्ली' नाम से उल्लेख।

4. नागभट्ट प्रथम (नाहड़)
- नरभट्ट का पुत्र।
- राजधानी मेड़ान्तक (मेड़ता)।
- ग्वालियर प्रशस्ति: "मलेच्छों का नाशक"।

5. यशोवर्धन
- नागभट्ट के पुत्र तात का पुत्र।
- राजोली ताम्रपत्र में वर्णन।

6. शिलूक
- चन्दुक का पुत्र, देवराज भाटी को हराया।

7. कक्क
- गौड़ नरेश धर्मपाल को मुदागिरि (मुंगेर) में हराया।
- दो पुत्र: **बाउक** (पद्मिनी से), **कक्कुक** (दुर्लभदेवी से)।

8. बाउक
- मयूर के आक्रमण को विफल किया, मण्डोर शिलालेख खुदवाया।

9. कक्कुक
- बाउक का भाई।
- घटियाला शिलालेख में प्रसिद्ध।
- विजय स्तम्भ बनवाया; वट्टनानक (बेड़ा-नाणा) नगर बसाया।
- मरु, वल्ल, मांड, अज्ज आदि क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त।

जालोर, कन्नौज और उज्जैन के गुर्जर प्रतिहार वंश

- **गुर्जर-प्रतिहार वंश (भीनमाल शाखा) – संक्षिप्त रूप में**
- **उद्भव** – मंडोर की प्रतिहार शाखा से
- **राजधानी** – भीनमाल (जालोर)
- **चीनी यात्री ह्वेनसांग** – 'गुर्जर देश' को कु-चे-लो, भीनमाल को पि-लो-मो-लो कहा।

प्रमुख शासकगण:

1. नागभट्ट-प्रथम (730–760 ई.)
- अरबों को सिंध के पार खदेड़ा – 'नारायण का अवतार' कहलाया
- उपाधियाँ – राम का द्वारपाल, मेघनाद का विरोधक, इन्द्र विनाशक
- सामंत – बप्पा रावल, चौहान, राठौड़, परमार आदि
- दरबार – नागावलोक दरबार

2. वत्सराज (783–795 ई.)
- उपाधि – रणहस्तिन
- कन्नौज त्रिकोणीय संघर्ष का प्रारंभ
- साहित्य – कुवलयमाला (उद्योतन सूरी), हरिवंश पुराण (जिनसेन सूरी)
- ओसियां के जैन मंदिरों का निर्माण

3. नागभट्ट-द्वितीय (795–833 ई.)
- कन्नौज पर अधिकार
- विरोध – राष्ट्रकूट गोविंद-III ने पराजित किया
- उपाधि – परमभट्टारक महाराजाधिराज (बुचकला अभिलेख)
- संघर्ष – बंगाल के पाल वंश व आयुध वंश से
- स्रोत – ग्वालियर प्रशस्ति, खुम्माण रासो

4. मिहिरभोज (836–885 ई.)
- धर्म – वैष्णव, उपाधि – आदिवराह (ग्वालियर अभिलेख), प्रभास (दौलतपुर)

- अरब यात्री सुलेमान – "मुसलमानों का सबसे बड़ा शत्रु"
- कश्मीर के कल्हण द्वारा वर्णित
- साहित्यिक रचनाएँ – शृंगार प्रकाश, युक्ति, कल्पतरु, राज मृगांक
- सिक्कों पर 'आदिवराह' अंकित
- स्कन्द पुराण – पुत्र महेन्द्रपाल को गद्दी सौंप तीर्थयात्रा

महेंद्रपाल-प्रथम (885–910 ई.)
- माता: चन्द्रा भट्टारिका देवी
- गुरु व दरबारी कवि: **राजशेखर**
- उपाधियाँ: निर्भय नरेंद्र, रघुकुल तिलक, रघुकुल चूड़ामणि
- राज्य विस्तार: काठियावाड़ तक
- राजशेखर की रचनाएँ: कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, विद्धशालभंजिका, प्रबंधकोष, बालभारत, बालरामायण, हरविलास, भुवनकोष

महिपाल-प्रथम (914–943 ई.)
- राजशेखर द्वारा दी उपाधियाँ: आर्यावर्त का महाराजाधिराज, रघुवंश-मुकुटमणि
- ग्रंथ: प्रचंड पाण्डव (राजशेखर)
- अरब यात्री अल मसूदी की यात्रा – **915** ई.
- विजयी अभियान: कुलूत व रंठ जनजातियों पर
- हड्डल अभिलेख: सामंत 'धरणिवराह' – सौराष्ट्र पर शासन
- उज्जैन पर पुन: अधिकार (चन्देल शासक हर्ष की सहायता से)

महेन्द्रपाल-द्वितीय
- माता: प्रसाधना देवी
- महेन्द्रपाल-प्रथम के उत्तराधिकारी
- इनके बाद शासक: **देवपाल**, **विनायकपाल-द्वितीय**, **महिपाल-द्वितीय**, **विजयपाल**

महिपाल-द्वितीय
- बयाना अभिलेख में उल्लेख
- उपाधि: महाराजाधिराज महिपाल देव

विजयपाल
- राजौर अभिलेख में वर्णन – क्षितिपाल देव का पुत्र

राज्यपाल (990–1019 ई.)
- कन्नौज में 10,000 मंदिर; 7 किले बनवाए
- महमूद गजनवी का आक्रमण (1018 ई.) – राज्यपाल जंगल में भागा
- चंदेल शासक विद्याधर द्वारा कायर कहा गया
- युद्ध में वीरगति को प्राप्त
- प्रतिहार सत्ता राजस्थान तक सिमटी

त्रिलोचनपाल (1019–1027 ई.)
- राजधानी: बारी (रामगंगा-सरयू संगम) – अलबरुनी के अनुसार
- 1020 ई.: महमूद गजनवी का पुन: आक्रमण

यशपाल (1027–1036 ई.)
- अंतिम शासक
- कड़ा शिलालेख में दान का उल्लेख
- बाद में प्रतिहार – कन्नौज में सामंत के रूप में
- तत्पश्चात् गहड़वाल वंश का शासन

प्रतिहार शाखाएँ:
- **भीनमाल (जालोर) शाखा** – प्रारंभिक राजधानी
- **अवन्ति/उज्जैन शाखा** – नागभट्ट-प्रथम के समय
- **कन्नौज शाखा** – नागभट्ट-द्वितीय द्वारा स्थापित

चौहान राजवंश

- **शब्द उद्भव:** 'चौहान' शब्द, संस्कृत के चाहमान शब्द का स्थानीय रूप है।
- **प्रारंभिक शासन:**
- हम्मीर महाकाव्य के अनुसार चौहानों का प्रारंभिक क्षेत्र पुष्कर था।
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार यह क्षेत्र सांभर (सपादलक्ष/शाकम्भरी) था, जिसकी राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) थी।

उत्पत्ति के विभिन्न मत:
- पृथ्वीराज रासो, नैणसी और सूर्यमल्ल मीसण के अनुसार चौहान अग्निकुल से उत्पन्न थे।
- हम्मीर महाकाव्य और पृथ्वीराज विजय में इन्हें सूर्यवंशी बताया गया है (पं. गौरीशंकर ओझा भी इस मत के पक्षधर हैं)।
- कर्नल टॉड व विलियम क्रुक ने इन्हें विदेशी जाति कहा है।
- डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार ये वत्सगोत्रीय ब्राह्मण थे।
- क्याम खाँ रासो के अनुसार ये ब्राह्मण वंशीय थे।

शासन क्षेत्र:
- चौहान जांगल देश (वर्तमान बीकानेर, जयपुर, उत्तरी मारवाड़) के निवासी थे।
- इनका प्रमुख क्षेत्र सपादलक्ष (सांभर) और राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) थी।

प्रमुख शाखाएँ:
- शाकम्भरी, रणथम्भौर, नाडोल, जाबालिपुर, सप्तपुर, लाट, धवलपुरी, प्रतापगढ़ के चौहान।

शाकम्भरी के चौहान

संस्थापक वासुदेव चौहान
- बिजौलिया शिलालेख और राजशेखर के प्रबंधकोष के अनुसार चौहानों का संस्थापक **वासुदेव** था।
- वासुदेव ने लगभग **551 ई.** में शाकम्भरी (सांभर) क्षेत्र में शासन की स्थापना की।
- सांभर झील का निर्माण भी वासुदेव ने कराया और राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) बनाई।

अन्य प्रमुख शासक
- **अजयपाल** (7वीं शताब्दी): सांभर नगर की स्थापना की।
- **सिंहराज**: नाडोल में चौहानों की शाखा उसके भाई **लक्ष्मण** ने स्थापित की।
- **विग्रहराज द्वितीय**:
- हर्षनाथ अभिलेख (973 ई.) से जानकारी मिलती है।
- चालुक्य मूलराज प्रथम को हराया, भड़ौंच में आशापुरा माता मंदिर बनवाया।
- सबसे प्रतापी प्रारंभिक शासक माना गया।

अजयराज (1105–1133 ई.):
- अजमेर की स्थापना (1113 ई.) की और 'अजयप्रिय द्रम्म' नामक सिक्के चलाए।
- परमार नरवर्मन और चालुक्य मूलराज द्वितीय को हराया।

अर्णोराज (1133–1155 ई.):
- आनासागर झील और वराह मंदिर (पुष्कर) का निर्माण।
- विद्वानों देवबोध व धर्मघोष को संरक्षण दिया।
- पुत्र जगदेव द्वारा हत्या (1155 ई.)।

विग्रहराज चतुर्थ / बीसलदेव (1158–1163 ई.):
- चौहानों का स्वर्णयुग।
- गजनी के खुशरुशाह व दिल्ली के तँवर को हराया, दिल्ली को राजधानी बनाई।
- हरिकेली नाटक (संस्कृत) और ललित विग्रहराज नाटक की रचना।
- बीसलपुर नगर व बांध तथा सरस्वती कंठाभरण संस्कृत विद्यालय की स्थापना की।
- यह विद्यालय बाद में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा अढाई दिन का झोंपड़ा में बदला गया।

अढाई दिन का झोंपड़ा:
- राजस्थान की प्रथम मस्जिद, फारसी अभिलेख यहीं मिले।
- डिजाइन अबु बकर ने बनाया।
- कर्नल टॉड के अनुसार यह सबसे सुरक्षित प्राचीन इमारत है।

सोमेश्वर चौहान
- अर्णोराज व कांचन देवी का पुत्र।
- पृथ्वीराज द्वितीय की मृत्यु के बाद शाकम्भरी का शासक बना।
- गुजरात के भीम द्वितीय द्वारा युद्ध में मारा गया।

पृथ्वीराज चौहान का संबंध
- इनके **नाना अनंगपाल द्वितीय** ने दिल्ली का शासन सौंपा।

पृथ्वीराज-तृतीय / पृथ्वीराज चौहान (1177–1192 ई.)
- जन्म: **1166 ई.**, अन्हिलपाटन (गुजरात)
- पिता: **सोमेश्वर**, माता: **कर्पूरी देवी** (कलचुरी वंश)
- चौहान वंश का **अंतिम प्रतापी शासक**

उपाधियाँ व दरबारी
- उपाधियाँ: **रायपिथौरा, दलपुंगल (विश्व विजेता)**
- प्रधानमंत्री: **कदम्बवास**
- सेनापति: **भुवनैकमल्ल**

प्रमुख घटनाएँ
- **1182 ई.**: तुमुल का युद्ध – चंदेल शासक **परमर्दिदेव** को हराया
- **1184 ई.**: इच्छिनी विवाह विवाद – चालुक्य भीमदेव द्वितीय से संघर्ष
- जयचंद गहड़वाल से कटु संबंध – उसकी पुत्री **संयोगिता** से स्वयंवर से विवाह

तराईन के युद्ध:

1. प्रथम युद्ध (1191 ई.) –
- स्थान: तराईन/तारावड़ी (हरियाणा)
- विरोधी: मुहम्मद गौरी
- परिणाम: **पृथ्वीराज की विजय**
- सेनापति: **चामुंडराय**

2. द्वितीय युद्ध (1192 ई.) –
- गौरी का दूत: **किवान-उल-मुल्क**
- पृथ्वीराज के सेनापति: **गोविन्दराज तोमर**, **समरसिंह**
- परिणाम: **पृथ्वीराज की पराजय**, बंदी बनाकर **गजनी** ले जाया गया

साहित्यिक योगदान व दरबारी विद्वान
- **चंदबरदाई**: पृथ्वीराज रासो (पुत्र जल्हण ने पूर्ण किया)
- अन्य विद्वान: **जयानक** (पृथ्वीराज विजय), **वागीश्वर**, **जनार्दन आशाधर**, **विद्यापति गौड़**, **विश्वरूप**

मुख्य ऐतिहासिक स्रोत
- पृथ्वीराज रासो – **चंदबरदाई**
- ताज-उल-मासिर – **हसन निजामी**
- तबकात-ए-नासिरी – **मिनहाज-उस-सिराज**

रणथम्भौर के चौहान

रणथम्भौर के चौहान वंश
- संस्थापक: **गोविन्दराज** (पृथ्वीराज तृतीय का पुत्र) – कुतुबुद्दीन ऐबक की सहायता से राज्य स्थापित किया।
- **वीरनारायण** के समय इल्तुतमिश का आक्रमण विफल हुआ।

हम्मीर देव चौहान (1282–1301 ई.)
- रणथम्भौर की सबसे प्रतापी शाखा का शासक, प्रसिद्ध: **"हम्मीर हठ"**
- गुरु: **राघव देव**, दरबारी विद्वान: बीजादित्य
- प्रसिद्ध दोहा:
  "सिंह सवन, सत्पुरुष वचन... तिरिया तेल हम्मीर हठ चढ़े न दूजी बार"

मुख्य घटनाएँ:
- **1291 ई.**: जलालुद्दीन खिलजी का झाईन दुर्ग पर आक्रमण – गुरुदास सैनी ने रक्षा की (मिफता-उल-फुतुह में वर्णित)
- मंगोल सेनानायक मुहम्मदशाह को शरण दी – अलाउद्दीन खिलजी नाराज़ हुआ
- **अलाउद्दीन के सेनापति उलुग खां व नुसरत खां** भेजे गए – नुसरत मारा गया
- **1301 ई.**: अलाउद्दीन खुद रणथम्भौर आया – **धोखे से सेनापति रतिपाल, रणमल और सुर्जनशाह को मिला लिया**
- हम्मीर ने अंतिम युद्ध में **केसरिया किया**, रानी **रंगदेवी** ने **जौहर**, पुत्री **देवल देवी** ने राजस्थान का पहला जल जौहर किया
- युद्ध में हम्मीर वीरगति को प्राप्त हुआ – चौहान वंश की इस शाखा का अंत
- अमीर खुसरो की खजाइन-उल-फुतुह में वर्णन: "कुफ्र का घर इस्लाम का घर बन गया"
- **17 युद्ध**, 16 में विजय, अंतिम में वीरगति
- रणथम्भौर में पिता **जयसिंह** की स्मृति में 32 खंभों की छतरी बनवाई – जिसे **'न्याय की छतरी'** कहा जाता है

नाडोल के चौहान

नाडोल के चौहान वंश
- **संस्थापक**: लक्ष्मण चौहान (वाक्पतिराज का पुत्र, शाकम्भरी शाखा से)

- **981 ई.** में **नाडोल में आशापुरा माता मंदिर** का निर्माण कराया।
- उत्तराधिकारी **शोभित (सोही)** ने **भीनमाल के परमार शासक मान परमार** को पराजित कर भीनमाल पर शासन स्थापित किया।
- **किराडू अभिलेख** में उल्लेख: उत्तरकालीन शासक **अल्हणदेव**।

जालोर के चौहान

- **जालोर का प्राचीन नाम** – जाबालिपुर, किले को सुवर्णगिरि कहते थे।
- **संस्थापक** – कीर्तिपाल (कीतू), नाडोल के अल्हणदेव का पुत्र (1181 ई.)
- **किला** – सोनगढ़ पहाड़ी पर बनवाया; सुकड़ी नदी किनारे स्थित।

प्रमुख शासक

1. समरसिंह

- विवाह संबंध – पुत्री लीला देवी का विवाह भीमदेव द्वितीय (गुजरात) से।

2. उदयसिंह (1205–1257)

- 1228 ई. – इल्तुतमिश का आक्रमण विफल।
- 1254 ई. – नसीरुद्दीन महमूद की हार।

3. चाचिगदेव (1257–1282)

- "महाराजाधिराज" की उपाधि।
- उत्तराधिकारी – सामंत सिंह → कान्हड़देव।

कान्हड़देव (1305–1311)

- **सर्वाधिक शक्तिशाली शासक**।
- ग्रंथ स्रोत: कान्हड़दे प्रबंध, वीरमदेव री बात, खजाइन-उल-फुतुह, तारीख-ए-फरिश्ता।
- वीरमदेव (पुत्र) ने फिरोजा (खिलजी की पुत्री) से विवाह से इनकार किया।

अलाउद्दीन खिलजी से संघर्ष:

1. **1305 ई.** – सेनापति ऐन-उल-मुल्क से पहला संघर्ष।
2. **1311 ई.** – सेनापति बीका दहिया के विश्वासघात से जालोर पर कब्जा।

- कान्हड़देव व वीरमदेव वीरगति को प्राप्त, स्त्रियों ने जौहर किया।
- किले का नाम जलालाबाद रखा गया।

अन्य विवरण:

- **सिवाणा दुर्ग (1308)** – कमालुद्दीन गुर्ग ने जीता; नाम बदला खैराबाद।
- हसन निजामी – "जालोर ऐसा किला है जिसका द्वार कोई आक्रमणकारी न खोल सका।"
- **कुलदेवी** – आशापुरा माता (महोदरी माता)।

सिरोही के चौहान

सिरोही के चौहान (देवड़ा शाखा)

- सिरोही का प्राचीन नाम **शिवपुरी** (कर्नल टॉड) एवं **अर्बुद प्रदेश** (प्राचीन साहित्य)।
- **संस्थापक** – राव लुम्बा देवड़ा (1311 ई.), जालोर की देवड़ा शाखा से संबंध।
- राजधानी – चंद्रावती, परमारों को हराकर सिरोही में चौहान वंश की स्थापना।

प्रमुख शासक

1. सहसमल देवड़ा (1425 ई.)

- वर्तमान सिरोही नगर की स्थापना।
- राणा कुम्भा से पराजित; विजय स्मृति में अचलगढ़ दुर्ग का निर्माण।

2. लाखा देवड़ा

- पावागढ़ पर आक्रमण; कालिका माता की मूर्ति सिरोही लाई।
- लाखनाव तालाब का निर्माण।

3. जगमाल देवड़ा

- रायमल (मेवाड़) के समकालीन।
- 1474 ई. – बहलोल लोदी के आक्रमण में मेवाड़ की सहायता।
- मलिक मजीद खाँ (जालोर) को हराया।

4. सुरताण देवड़ा

- 1575 ई. – अकबर की अधीनता स्वीकार।
- 1583 ई. – दत्ताणी युद्ध में जगमाल सिसोदिया को हराया।
- दरबारी कवि दुरसा आढ़ा – ग्रंथ: राव सुरताणा कवित्त।

5. शिवसिंह (1823 ई.)

- अंग्रेजों से संधि करने वाली अंतिम रियासत बनी।

अंतिम शासक

- अभयसिंह देवड़ा – सिरोही के चौहान वंश का अंतिम शासक।

हाड़ौती के चौहान

- वर्तमान बूँदी, कोटा, बाराँ – हाड़ौती क्षेत्र
- पहले यहाँ मीणाओं का अधिकार था
- कुंभा कालीन राणपुर लेख में बूँदी को वृंदावती कहा गया है

प्रमुख शासक:

1. देवा हाड़ा (1241 ई.)

- बम्बावदे (मेवाड़) का सामंत
- मीणाओं से बूँदी छीनकर राज्य की स्थापना
- पुत्र समरसिंह हाड़ा – कोटा पर अधिकार (1264 ई.)

2. बरसिंह हाड़ा (1354 ई.)

- तारागढ़ दुर्ग (बूँदी) का निर्माण

3. राव सुर्जन हाड़ा (1554–1585 ई.)

- 1568 ई. – बूँदी को मेवाड़ से स्वतंत्र किया
- रणथंभौर दुर्ग पर अधिकार
- 1569 ई. – अकबर की अधीनता स्वीकार
- उपाधियाँ – रावराजा, 5 हजार मनसब
- विद्वान कवि चंद्रशेखर और रणछोड़ जी का मंदिर (द्वारका)

4. रतनसिंह हाड़ा (1607–1631 ई.)

- जहाँगीर से रामराजा व सरबुलंदराय की उपाधियाँ
- खुर्रम के विद्रोह को दबाया

5. बुद्धसिंह हाड़ा (1695–1730 ई.)

- नाथावती रानी – राणीजी की बावड़ी (1699 ई.)
- मुगल बादशाह फर्रुखशियर ने राज्य भीमसिंह (कोटा) को सौंपा

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

- **शुक्र नीति** - राज्य को मानव शरीर का अंग मानते हुए शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग को शरीर के प्रमुख अंग **'हाथ'** की संज्ञा दी गई है।
- शुक्र नीति के अनुसार **सैन्य दुर्ग सर्वश्रेष्ठ** श्रेणी का **दुर्ग** है।

शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग 9 श्रेणियों के होते हैं-

1. **गिरी दुर्ग** – पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में निर्मित है।
   उदाहरण - मेहरानगढ़(जोधपुर), तारागढ़(अजमेर)।
2. **एरण दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जहाँ तक पहुँचने का मार्ग कठिन और दुर्गम हो।
   उदाहरण - चित्तौडगढ़ और जालौर दुर्ग।
3 **वन दुर्ग –** घने जंगलों में निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - सिवाना का दुर्ग।
4. **धान्वन दुर्ग –** समतल सतह पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - जैसलमेर का दुर्ग।
5. **जल दुर्ग –** नदियों के संगम स्थल पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - गागरोण दुर्ग।
6. **पारिख दुर्ग –** चारों तरफ गहरी खाई युक्त दुर्ग।
   उदाहरण- भरतपुर दुर्ग, जूनागढ़ दुर्ग।
7. **पारिध दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसके चारों तरफ परकोटा हो।
   उदाहरण- चित्तौडगढ़, जैसलमेर दुर्ग।
8. **सैन्य दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसमें सैनिक निवास करते हो।
9. **सहाय दुर्ग –** जहाँ सैनिक व आमजन दोनों निवास करते हो।

- राजस्थान में महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के पश्चात् सर्वाधिक दुर्गों का निर्माण हुआ है।
- राजस्थान में दुर्गों के स्थापना का विकास का प्रथम आधार **कालीबंगा की खुदाई** में मिलता है।

कौटिल्य के अनुसार दुर्ग की 4 श्रेणियाँ है-

- 1. औदुक दुर्ग 2. पर्वत दुर्ग
  3. धान्वन दुर्ग 4. वन दुर्ग
- **चित्तौड़ दुर्ग** धान्वन श्रेणी के दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी का दुर्ग है।

राजस्थान के 6 दुर्ग यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल -

- 1. आमेर दुर्ग 2. गागरोण दुर्ग
  3. कुम्भलगढ़ दुर्ग 4. जैसलमेर दुर्ग
  5. रणथम्भौर दुर्ग 6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
- ये दुर्ग **जून, 2013** में नोमपेन्ह (कम्बोडिया) में हुई वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की बैठक में यूनेस्को साइट की सूची में शामिल किए गये।

राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग-

- राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
- मिट्टी से निर्मित दुर्ग –
  1. लोहागढ़ दुर्ग 2. भटनेर दुर्ग
- **राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग –**
  1. मोहनगढ़ (जैसलमेर) 2. लोहागढ़ (भरतपुर)
- सर्वाधिक आक्रमण झेलने वाला दुर्ग – तारागढ़ (अजमेर)
- सर्वाधिक विदेशी आक्रमण वाला दुर्ग – भटनेर दुर्ग
- सर्वाधिक गहराई में स्थित दुर्ग – लोहागढ़
- सर्वाधिक बुर्जों वाला किला – सोनारगढ़

सोनारगढ़/जैसलमेर का किला

- जैसलमेर के सोनारगढ़ के नाम से प्रसिद्ध दुर्ग की नींव **जैसल भाटी** ने 1155 ई. में रखी।
- इस दुर्ग का निर्माण शालिवाहन द्वितीय ने पूर्ण करवाया।
- **उपनाम -** सोनगढ़, गौहरारगढ़, त्रिकूटगढ़ एवं 'उत्तर भड़ किवाड़'।
- **प्रकार -** धान्वन श्रेणी का दुर्ग।
- यह त्रिकुट पहाड़ी पर त्रिभुजाकार आकृति में निर्मित है।
- पीले पत्थरों से निर्मित यह किला **राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला है**।
- सोनारगढ़ दुर्ग का निर्माण **चूने का प्रयोग किए बिना पत्थरों को जोड़कर** किया गया है।
- जैसलमेर दुर्ग विश्व का एकमात्र दुर्ग है जिसकी **छत लकड़ी की** बनी हुई है।
- सोनारगढ़ किले का **प्रवेश द्वार अक्षयपोल** कहलाता है।
- सोनारगढ़ किले के पास ही **गढ़ीसर/घडसीसर झील** स्थित है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

(1) **99 बुर्ज-** यह दुर्ग **सर्वाधिक बुर्जों वाला (99 बुर्जे)** किला है।
(2) **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर-** इस दुर्ग का प्रमुख मंदिर **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर** है, जिसमें जैसलमेर शासकों के आराध्य देव की मूर्ति मेड़ता से लाई गई।
(3) इस दुर्ग का प्राचीन मंदिर **आदिनाथ जी (जैन मंदिर)** का है।
(4) जैसलु कुआँ
(5) कमरकोट (घाघरानुमा परकोटा)
(6) **जिनभद्र सूरी भंडार -** यहाँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ रखे हुए है।
(7) **शीश महल -** दुर्ग में महारावल अखैसिंह द्वारा निर्मित सर्वोत्तम विलास।

ढाई साके-:

- जैसलमेर दुर्ग ढाई साकों के लिए प्रसिद्ध है।
- **प्रथम साका -** जैसलमेर का प्रथम साका भाटी शासक **मूलराज द्वितीय और अलाउद्दीन खिलजी** के मध्य 1312 ई. में हुआ, इसमें मूलराज द्वितीय के नेतृत्व में केसरिया हुआ।
- **दूसरा साका -** जैसलमेर का दूसरा साका **रावल दूदा और दिल्ली के फिरोजशाह तुगलक** के मध्य 1370-71 ई. में हुआ।
- **तीसरा अर्द्ध साका** - 1550 ई. में जैसलमेर शासक राव **लूणकरण और कंधार शासक अमीर अली** के मध्य हुआ। इसमें वीरों ने केसरिया तो किया लेकिन जौहर नहीं हुआ, इसलिए इसे अर्द्ध साका कहा।
- **अबुल फजल** ने इस दुर्ग के बारे में कहा कि **"घोड़ा कीजे काठ का पग किजे पाषाण शरीर राखे बखतरबंद ते पहुँचे जैसाण।"**

नोट-
- राजस्थान इतिहास का यह **एकमात्र अर्द्ध साका** हुआ।
- राजस्थान के इस दुर्ग को **यूनेस्को** ने वर्ष 2013 में **विश्व विरासत** में शामिल किया।
- फिल्म निर्देशक **सत्यजीत रे** द्वारा इस दुर्ग पर '**सोनार किला फिल्म**' का निर्माण किया गया।
- दूर से देखने पर यह दुर्ग पहाड़ी पर **"लंगर डाले एक जहाज का आभास"** कराता है।

भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)

- इस दुर्ग का निर्माण तीसरी सदी के अन्त (295 ई.) में **भूपत भाटी** द्वारा **सरस्वती या घग्घर नदी** के तट पर करवाया गया था।
- इस दुर्ग का अन्य नाम **'उत्तरी सीमा का प्रहरी'** है।
- **वास्तुकार -** कैकेया।
- **श्रेणी -** धान्वन दुर्ग।
- इस दुर्ग में **52** विशाल बुर्ज हैं।
- किले का निर्माण पक्की हुई ईटों और चूने से हुआ था।
- भटनेर दुर्ग राजस्थान का **सबसे प्राचीन दुर्ग** है।
- भटनेर दुर्ग पर **सबसे अधिक विदेशी आक्रमण** हुए।
- 1003 ई. में **महमूद गजनवी** का प्रथम विदेशी आक्रमण हुआ तथा अंतिम विदेशी आक्रमण 1532-34 ई. का **कामरान** का हुआ।
- यह दुर्ग राजस्थान का एकमात्र ऐसा दुर्ग है जहाँ पर **मुस्लिम महिलाओं ने जौहर** किया। यह जौहर 1398 ई. में हुआ था। उस समय भटनेर का शासक **दूलचंद** था और आक्रमण **तैमूर लंग** का हुआ।
- इस जौहर का प्रमाण तैमूर लंग की आत्मकथा **'तुजुक ए तैमुरी'** में मिलता है।
- **1805 ई.** में बीकानेर शासक **सूरतसिंह** ने भटनेर शासक **जावतासिंह भट्टी** को मंगलवार के दिन पराजित कर इसका नामकरण **हनुमानगढ़** किया।
  इस दुर्ग में बलबन के किलेदार **'शेर खाँ की कब्र'** है।
- भटनेर दुर्ग में एक प्रवेशद्वार पर एक राजा के साथ **6** नारियों की आकृतियाँ बनी हैं।

जूनागढ़ (बीकानेर)

- **निर्माण -** 1589-94 ई. में **रायसिंह** के द्वारा करवाया गया।
- यह किला राती घाटी में **'बीका की टेकरी'** के ऊपर निर्मित दुर्ग है।
- जूनागढ़ का दुर्ग **'धान्वन दुर्ग'** की श्रेणी में आता है।

उपनाम-
(1) जमीन का जेवर
(2) लालगढ़- लाल पत्थरों से निर्मित होने के कारण '**लालगढ़**' भी कहा जाता है।
(3) रातीघाटी का किला।
- यह दुर्ग **सूरसागर झील के किनारे** स्थित है।
- **दुर्ग की आकृति -** चतुष्कोण या चतुर्भुजाकृति।

प्रवेश द्वार -:
- **बाहरी -** कर्णपोल एवं चाँदपोल।
- **भीतरी -** दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल एवं ध्रुवपोल।
- सूरज पोल पर **राजा रायसिंह की प्रशस्ति** उत्कीर्ण है। **(प्रशस्ति रचयिता- जैता)**
- **मुख्य द्वार सूरज पोल** पर गजारूढ़ '**जयमल व फत्ता**' की मूर्तियाँ स्थित है, जो मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के सेनापति थे।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-
(1) अनूप संग्रहालय
(2) फूल महल
(3) चन्द्र महल
(4) लाल निवास
(5) छत्र महल
(6) गंगा निवास महल
(7) दलेल निवास महल
(8) रतन निवास महल।
(9) **दुर्ग में दो कुएँ** - रामसर एवं रानीसर।
(10) 33 **करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर -** यहाँ सिंह पर सवार गणपति (हेरंब गणपति) की दुर्लभ प्रतिमा है।
(11) जूनागढ़ के दुर्ग में **नागणेची माता व लक्ष्मीनारायण जी** का मंदिर है। लक्ष्मीनाराय जी का मंदिर जूनागढ़ का आकर्षक मंदिर है, इसका **निर्माण रतनसिंह** ने करवाया।
- राजस्थान में पहली बार लिफ्ट इसी दुर्ग में लगाई थी।
- **जूनागढ़ दुर्ग के सम्बन्ध में दीनानाथ दुबे की उक्ति – 'दीवारों के भी कान होते है पर जूनागढ़ के महलों की दीवारें तो बोलती हैं।'**
- यह दुर्ग वास्तव में आगरा के दुर्ग से मिलता-जुलता है।

मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)

- **निर्माण -**1459 ई. में राव जोधा द्वारा करवाया गया।
- दुर्ग की **नींव करणी माता** (रिद्धि बाई) ने रखी।
- **इस दुर्ग की श्रेणी** – गिरि दुर्ग।
- **अवस्थिति -** पंचेटिया पहाड़ी/चिड़िया टुक पहाड़ी पर स्थित है।
- **उपनाम-** कागमुखीगढ़, मयूरध्वज गढ़, जोधा की ढाणी, सूर्यगढ़, गढ़ चिंतामणि, मारवाड़ का सिरमौर।
- इस दुर्ग की नींव में **राजाराम जी मेघवाल** को जीवित चुना गया।
- **प्रवेश द्वार -**
  (1) **जयपोल** – उत्तर-पूर्व में मानसिंह द्वारा **1808 ई.** में निर्मित।
  (2) **फतेहपोल** – दक्षिण-पश्चिम में अजीतसिंह द्वारा **1707 ई.** में निर्मित।
  (3) **अन्य प्रवेश द्वार** - ध्रुव पोल, सुरज पोल, इमरत पोल तथा भैरों पोल।
- **मेहरानगढ़ की मुख्य तोपें -** किलकिला, गजनी, शम्भूबाण, गजक, गुब्बार जनजमा, कड़क, बिजली आदि।
- मेहरानगढ़ दुर्ग में पेयजल स्रोतों में **रानीसर तथा पदमसर** तालाब है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-:
प्रमुख महल- दुर्ग के भीतर फ़तेह महल, फूल महल, शृंगार चंवरी महल, मोती महल स्थित हैं। इनमें फूल महल (अभयसिंह द्वारा निर्मित) मेहरानगढ़ का सबसे आकर्षक महल है।

मंदिर:

(1) **चामुण्डा माता का मंदिर-** मेहरानगढ़ दुर्ग में राठौड़ राजवंश की आराध्य देवी **चामुण्डा माता का मंदिर** है, जिसका निर्माण **राव जोधा** द्वारा करवाया गया। 2008 **वर्ष में चामुण्डा मंदिर में भगदड़ मच जाने से कई लोग मारे गये इसकी जाँच हेतु जसराज चोपड़ा कमेटी का गठन किया गया।**

(2) **मुरली मनोहर** (3) **आनंदघनजी**

(4) **राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी का मंदिर**

अन्य दर्शनीय स्थल-:

- **मामा-भान्जा (धन्ना और भींवा) -** यह छतरी मेहरानगढ़ दुर्ग में लौहा पोल द्वार के पास है। यह **10** खम्भों की छतरी है।
- भूरे खाँ की मजार इसी दुर्ग में है।
- **पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय -** इस दुर्ग में महाराजा मानसिंह द्वारा स्थापित पुस्तकालय।
- **वीर कीरतसिंह सोढ़ा** की छतरी इसी दुर्ग में है।
- **श्रृंगार चौकी -** महाराजा तख्तसिंह द्वारा दौलत खाने के आँगन में निर्मित चौकी, जहाँ जोधपुर के राजाओं का राजतिलक होता था।
- **जल स्रोत-** दुर्ग में **राणीसर एवं पद्मसर** तालाब जल के मुख्य स्रोत है। राणीसर तालाब का निर्माण राव जोधा की रानी जसमा हाड़ी ने करवाया था।
- दुर्ग में स्थित संग्रहालय में अकबर की तलवार रखी हुई है।
- इस दुर्ग के बारे में **रुडयार्ड क्लिपिंग** ने कहा कि **"इसका निर्माण तो परियों व फरिश्तों ने करवाया।"**
- **जैकलीन कैनेडी** ने इस दुर्ग को 'दुनिया का आठवाँ अजुबा' कहा।
- राजस्थान का प्रथम दुर्ग जिसमें '**ऑडियो गाइड टूर**' की सुविधा है।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- **निर्माण-** चित्तौड़गढ़ दुर्ग के निर्माता चित्रांगद मौर्य (8वीं सदी में निर्मित) थे। (प्रसिद्ध ग्रंथ 'वीर विनोद' के अनुसार)
- **उपनाम –** दुर्गों का सिरमौर, राजस्थान का गौरव, मालवा का प्रवेश द्वार, दक्षिणी सीमा का प्रहरी, त्याग व बलिदान का दुर्ग।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग **राजस्थान का सबसे बडा लिविंग फोर्ट** है।
- राजस्थान का **एकमात्र दुर्ग जिसमें खेती** होती है।
- **आकृति -** व्हेल मछली के समान।
- यह दुर्ग चित्तौड़ में **गंभीरी और बेड़च नदियों** के संगम पर स्थित है।
- **श्रेणी एवं पठार- 616** मीटर ऊँचे मेसा पठार पर निर्मित गिरि दुर्ग। यह दुर्ग **'**धान्वन दुर्ग**'** को छोड़कर शेष सभी **8** श्रेणियों में रखा जा सकता है।
- यह दुर्ग राजस्थान के किलों में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा दुर्ग है। **(**क्षेत्रफल **– 28** वर्ग किमी.**)**
- यह दिल्ली-मालवा मार्ग पर अवस्थित है।
- **प्रथम विदेशी आक्रमण -** मामू अफगान का।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग के बारे में **अबुल फजल** ने कहा कि **"गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढैया"**
- **7 प्रवेश द्वार**:- पाडन पोल **(**मुख्य व पहला प्रवेश द्वार**),** भैरव पोल**,** हनुमान पोल**,** गणेश पोल**,** जोड़ला पोल**,** लक्ष्मण पोल**,** रामपोल।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग तीन साके हुए –

1. प्रथम साका

- राजस्थान इतिहास का सबसे बड़ा साका **1303 ई.** में रावल रतनसिंह और अलाउद्दीन खिलजी के बीच हुआ।
- इस साके में रानी पद्मिनी ने जौहर किया।
- चित्तौड़गढ़ में प्रतिवर्ष चैत्र मास में जौहर मेला लगता है।

2. दूसरा साका

- दूसरा साका **1534 ई**. में गुजरात के शासक बहादुरशाह और रावल बाघसिंह के बीच हुआ।
- इस साके में जौहर रानी कर्मावती ने किया।

3. तीसरा साका

- तीसरा साका **1567-68 ई.** में मुगल बादशाह अकबर व फतेहसिंह सिसोदिया के बीच हुआ। इस साके में जौहर फूल कँवर ने किया।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

प्रमुख मंदिर-

- मीरा मंदिर, तुलजा भवानी मंदिर, कालिका माता का मंदिर, श्याम पार्श्वनाथ मंदिर, समद्धिश्वर मंदिर, कुम्भ श्याम मंदिर, सतबीश देवरी जैन मंदिर**,** शृंगार चंवरी जैन मन्दिर।

कीर्तिस्तम्भ/जैन प्रशस्ति-

- इसका निर्माण जैन व्यापारी जीजाशाह द्वारा करवाया गया है। कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति की रचना **कवि अत्रि** तथा बाद में **महेश** द्वारा पूरी की गई।
- **विजय स्तम्भ** - दुर्ग के भीतर विजय स्तम्भ भव्य इमारत है।
- **उपनाम-** **'**विष्णु स्तंभ**'** व **'**भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश।
- **निर्माण-** कुंभा ने **1437** ई. में '**सारंगपुर युद्ध**' में महमूद खिलजी प्रथम को पराजित किया**,** इस विजय के उपलक्ष्य में विजय स्तम्भ का निर्माण महाराणा कुम्भा द्वारा **1440** ई. से **1448 ई.** करवाया गया।
- यह **9** मंजिला इमारत है जो **30** फीट चौड़ा और **122** फीट ऊँचा है। इसमें कुल **157** सीढ़ियाँ हैं। इसकी तीसरी मंजिल पर **9** बार अल्लाह शब्द लिखा है।
- **सी. वी. वैद्य** ने इसे '**विष्णु स्तंभ**' कहा है तथा **उपेंद्र नाथ डे** ने इसे '**विष्णु ध्वज**' कहा है।
- **गोपीनाथ शर्मा** ने इसे '**लोक जीवन का रंगमंच**' कहा है तथा **आर. पी. व्यास** ने इसे **'हिंदू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि**' कहा है।
- **महाराणा स्वरूप सिंह** के समय इसका **जीर्णोद्धार** करवाया गया। फर्ग्यूसन ने इसकी तुलना **'टार्जन टावर**' (**इंग्लैंड**) से की है।
- इसे बनाने की प्रेरणा **बयाना के विष्णु स्तंभ** से मिली।
- **जलापूर्ति के स्रोत -** रत्नेश्वर तालाब**,** कुम्भसागर**,** गोमुख झरना**,** हाथीकुण्ड**,** भीमलत तालाब**,** झालीबाव तालाब।

अन्य दर्शनीय स्थल-

- फतह प्रकाश महल।
- कल्ला राठौड़ की छतरी **(4** खम्भों की छतरी**)**।

- लाखोटा की बारी :- चित्तौड़ दुर्ग की उत्तरी खिड़की।
- रावत बाघसिंह का स्मारक।
- नवलखा बुर्ज (बनवीर द्वारा निर्मित लघु दुर्ग)।

कुम्भलगढ़ दुर्ग (राजसमंद)

- **निर्माण-** इस दुर्ग का निर्माण **महाराणा कुम्भा** ने **1448-1458** ई. में मौर्य शासक सम्प्रति द्वारा निर्मित एक प्राचीन दुर्ग के ध्वंसावशेषों पर **शिल्पी मंडन** की देखरेख में करवाया था।
- **श्रेणी-** मेवाड़ – मारवाड़ सीमा पर राजसमन्द जिले में स्थित **गिरि दुर्ग।**
- यह दुर्ग अरावली पर्वत की **13** ऊँची चोटियों से घिरा दुर्ग है, जो **36** किमी. लम्बे परकोटे से सुरक्षित है। इस दुर्ग की सुरक्षा दीवार इतनी चौड़ी है कि एक साथ **आठ घुड़सवार** चल सकते हैं।
- **उपनाम -** मेवाड़ की तीसरी आँख, मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी, मत्स्येन्द्र, एस्ट्रूस्कन (**कर्नल टॉड**), कुंभलमेरु, कमलमीर आदि।
- **प्रवेश द्वार -** ओरठ पोल, हल्ला पोल, हनुमान पोल, विजय पोल, भैरव पोल, चौगान पोल, पागड़ा पोल और गणेश पोल। (**9** द्वार)

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में झालीबाव बावड़ी, कुम्भास्वामी, विष्णु मंदिर, मामादेव तालाब, झाली रानी की मालिया आदि अन्य प्रसिद्ध स्मारक निर्मित हैं।
- '**उड़ना राजकुमार की छतरी-** कुंवर पृथ्वीराज की छतरी (**12** खम्भों की छतरी)।
- **कटारगढ़ -** कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित लघु दुर्ग। कटारगढ़ में **महाराणा प्रताप का जन्म** हुआ था। राणा कुम्भा के पुत्र ऊदा ने कटारगढ़ में ही कुम्भा की हत्या की। कटारगढ़ में ही **झाली रानी का मालिया महल** बना हुआ है, इसे '**बादल महल**' भी कहा जाता है।
- इस दुर्ग में **नीलकंठ महादेव का मंदिर** तथा **यज्ञ की प्राचीन वेदी** है।

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- इसी दुर्ग से ही **महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी युद्ध की तैयारी** की थी।
- इस दुर्ग में ही **महाराणा उदय सिंह का राज्याभिषेक** हुआ था।
- इस दुर्ग की ऊँचाई के बारे में **अबुल फजल** ने लिखा है कि "यह इतनी बुलन्दी पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर सिर से पगड़ी गिर जाती है।"

जालोर दुर्ग (सुवर्णगिरि दुर्ग)

- **उपनाम –** जाबालिपुर, जालनगर, सोनगढ़, जलालाबाद, सुवर्णगिरि, कनकाचल।
- **निर्माण -** डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार **नागभट्ट प्रथम** ने (730-756 ई.) **सूकड़ी नदी के किनारे** करवाया।
- दुर्ग का प्रथम प्रवेश द्वार '**सूरजपोल**' है, दूसरा ध्रुवपोल, तीसरा चाँदपोल व चौथा सिरपोल है।

दर्शनीय स्थल-

- **जल स्रोत-** झालर बावड़ी, सोहन बावड़ी व पापड़ बावड़ी स्थित है।
- **मंदिर-** जोगमाया माता मंदिर, चामुंडा माता मंदिर स्थित है।
- इस दुर्ग के सामने **नटनी की छतरी** स्थित है।
- **महल-** मानसिंह महल, रानी महल, नाथावत महल ।
- **अन्य दर्शनीय स्थल-** संत मलिक शाह की दरगाह, परमार कालीन कीर्ति स्तम्भ, 'स्वर्णगिरि' मंदिर (जैन मंदिर), तोपखाना मस्जिद, आशापुरा माता का मंदिर एवं वीरमदेव की चौकी।
- इस किले में बनी तोपखाना मस्जिद पूर्व में परमार शासक भोज द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला थी।
- जालोर दुर्ग के बारे में **हसन निजामी** ने कहा कि "इस दुर्ग का दरवाजा कोई आक्रमणकारी अब तक नहीं खोल पाया।"

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- प्रतिहार नरेश **वत्सराज** के शासनकाल में **778** ई. में जैन **आचार्य उद्योतन सूरि** ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ **कुवलयमाला** की रचना की।
- **अलाउद्दीन खिलजी** ने कान्हड़देव के समय **1311-12** ई. में जालौर पर आक्रमण कर इस दुर्ग का नाम '**जलालाबाद**' रख दिया।

रणथम्भौर दुर्ग

- **उपनाम –** चित्तौड़गढ़ का छोटा भाई, दुर्गाधिराज, हम्मीर की आन-बान का प्रतीक आदि।
- **निर्माण-** ऐसी मान्यता है कि इस दुर्ग का निर्माण आठवीं शताब्दी में चौहान शासकों (**रणथम्मनदेव चौहान**) ने करवाया था।
- रणथम्भौर का प्राचीन नाम **रन्तःपुर** था, जिसका शाब्दिक अर्थ है **'रण की घाटी'।**
- रणथम्भौर का दुर्ग की **गिरि**, **एरण**, **वन तीनों श्रेणियों** का है।
- **प्रवेश द्वार -** नौलखा दरवाजा, हाथी पोल, गणेश पोल, सूरज पोल, त्रिपोलिया।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में **पीर सदरुद्दीन की दरगाह** है।
- राजस्थान का सबसे बड़ा **गणेश मंदिर** इस दुर्ग में ही स्थित है, जिसे **रणत भंवर/त्रिनेत्र गणेश मंदिर** के नाम से जानते हैं।
- रणथम्भौर दुर्ग में **32 खम्भों की छतरी** स्थित है, जिसका निर्माण **हम्मीरदेव चौहान** के पिता जयसिन्हा/जैत्रसिंह ने अपने शासनकाल में करवाया।
- **महल-** सुपारी महल, जौरा भौरा महल, हम्मीर महल, जोगी महल, हम्मीर कचहरी स्थित है।
  तालाब- रनिहाड़ तालाब, पद्मला तालाब।
- सुपारी महल (रणथम्भौर) में एक ही स्थान पर मन्दिर, मस्जिद और गिरजाघर स्थित है।

रणथम्भौर दुर्ग का साका-

- इस दुर्ग पर **11 जुलाई, 1301** को **अलाउद्दीन खिलजी** ने आक्रमण किया। हम्मीर विश्वासघात के परिणामस्वरूप लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ तथा उनकी पत्नी रंगदेवी ने जौहर किया, यह राजस्थान का **एकमात्र जल जौहर** था।

राजस्थान का भूगोल

राजस्थान का परिचय

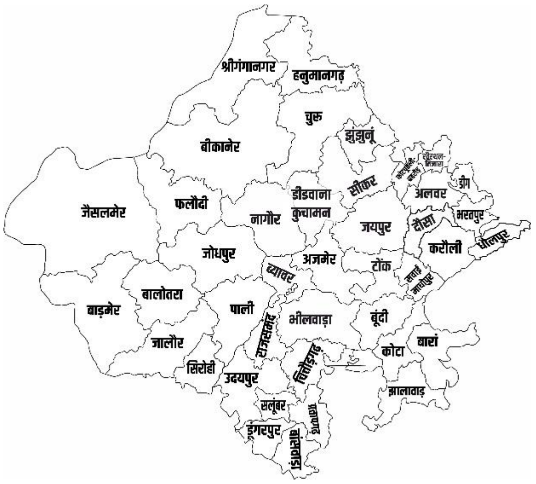

- राजस्थान क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का सबसे बड़ा राज्य है और यह देश के उत्तर–पश्चिम में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, (1,32,139 वर्ग मील) जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% या 1/10वाँ भाग या दसवां हिस्सा है।
- विश्व के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान 0.25% है।
- (1 नवम्बर, 2000 को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ राज्य के अलग होने से राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बना।)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के पाँच बड़े राज्य क्रमशः राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि राजस्थान श्रीलंका से पाँच गुना, चेकोस्लोवाकिया से तीन गुना, इजराइल से सत्रह गुना, ब्रिटेन से (1.5 गुना) है।
- जापान, कांगो रिपब्लिक, फिनलैंड और जर्मनी के क्षेत्रफल राजस्थान के क्षेत्रफल लगभग बराबर है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान के तीन बड़े जिले –
  1. जैसलमेर
  2. बीकानेर
  3. बाड़मेर

राजस्थान की स्थिति, विस्तार एवं आकृति

राजस्थान की ग्लोबीय स्थिति

अक्षांशीय स्थिति
अक्षांशीय दृष्टि से राजस्थान उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।)

देशांतरीय स्थिति
देशांतरीय दृष्टि से राजस्थान पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।)

- ग्लोब या विश्व के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति उत्तर–पूर्व (इशान कोण) में है।
- राजस्थान की आकृति विषम चतुष्कोणीय चतुर्भुजाकार या पतंगाकार है।
- इस आकृति के बारे में सर्वप्रथम 'टी.एच. हेंडले' ने बताया।

राजस्थान का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार:–

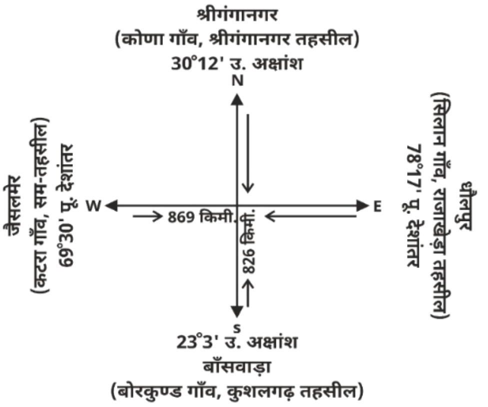

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार:–

- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°03' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश तक है।
- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 7°9' अक्षांशों के मध्य है।
- राजस्थान की उत्तर से दक्षिण लम्बाई 826 किलोमीटर है।
- राजस्थान का उत्तरतम बिन्दु कोणा गाँव (श्रीगंगानगर) है।
- राजस्थान का दक्षिणतम बिन्दु बोरकुण्ड (बाँसवाड़ा) है।

राजस्थान का देशांतरीय विस्तार:–

- राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार 69°30' पूर्वी देशांतर से 78°17' पूर्वी देशांतर तक है।
- राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 8°47' देशांतरों के मध्य है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम चौड़ाई 869 किलोमीटर है।
- राजस्थान का पूर्वी बिन्दु सिलाना गाँव (धौलपुर) है।
- राजस्थान का पश्चिमी बिन्दु कटरा गाँव (जैसलमेर) है।
- कर्क रेखा उत्तरी अक्षांश, जिसे कर्क रेखा भी कहते है, यह राजस्थान के दक्षिणी भाग से निकलती है।
- कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम से होकर गुजरती है।

राजस्थान का विस्तार:–

स्थलीय सीमा–

- राजस्थान की कुल स्थलीय सीमा 5,920 किलोमीटर है, जिसमें से 1,070 किलोमीटर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा 4,850 किलोमीटर अन्तर्राज्यीय सीमा है।

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा–

- राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है, जिसका नाम 'रेडक्लिफ रेखा' है।

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के बीच निर्धारित की गई है।
- रेडक्लिफ लाइन का निर्धारण 17 अगस्त, 1947 को हुआ था।

– रेडक्लिफ रेखा पर भारत के 3 राज्य और 2 केन्द्र शासित प्रदेश स्थित हैं–

तीन राज्य–

1. पंजाब
2. राजस्थान
3. गुजरात

दो केन्द्र शासित प्रदेश–

1. जम्मू–कश्मीर 2. लद्दाख

– रेडक्लिफ लाइन की कुल लम्बाई 3,323 किलोमीटर है, जिसमें से राजस्थान के साथ 1,070 किलोमीटर की सीमा लगती है।
– इस अन्तर्राष्ट्रीय रेखा का नामकरण ब्रिटिश 'वकील सिरिल रेडक्लिफ' के नाम पर किया गया था।
– अन्तर्राष्ट्रीय रेखा की शुरुआत श्रीगंगानगर जिले के हिन्दूमल कोट से शुरू होकर बाड़मेर जिले के भागल गाँव (बाखासर) तक है।
– राजस्थान के 6 जिले अन्तर्राष्ट्रीय रेखा पर स्थित हैं जो कि निम्नलिखित हैं–

1.	श्रीगंगानगर	210 किलोमीटर
2.	बीकानेर	168 किलोमीटर
3.	जैसलमेर	464 किलोमीटर
4.	बाड़मेर	228 किलोमीटर
5	फलोदी	

– अन्तर्राष्ट्रीय–सीमा पर स्थित जिलों के अतिरिक्त सबसे नजदीक जिला–मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा सबसे दूर धौलपुर है।
– रेडक्लिफ पर पाकिस्तान के 9 जिले स्थित हैं– पंजाब प्रान्त के 3 जिले बहावलनगर, बहावलपुर, रहीमयार खां जिले तथा सिंध प्रांत के 6 जिले घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं।

अन्तर्राज्यीय–सीमा–

– राजस्थान राज्य की स्थलीय सीमा पाँच राज्यों के साथ लगती है।
– यह अन्तर्राज्यीय सीमा 4,850 किलोमीटर है।
– राजस्थान के उत्तर में पंजाब राज्य है।
– राजस्थान के उत्तर–पूर्व में हरियाणा राज्य है।
– राजस्थान के पूर्व में उत्तर प्रदेश राज्य है।
– राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश राज्य है।
– राजस्थान के दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य है।

पंजाब राज्य–

– यह राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा 89 किलोमीटर बनाता है।
– पंजाब राज्य की सीमा पर स्थित राजस्थान के दो जिले हैं।
– श्रीगंगानगर पंजाब के साथ सर्वाधिक व हनुमानगढ़ न्यूनतम सीमा बनाता है।

हरियाणा राज्य–

– हरियाणा राज्य राजस्थान के साथ 1,262 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
– हरियाणा के साथ राजस्थान के हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूँ, सीकर, कोटपूतली - बहरोड, खैरथल – तिजारा, डीग, अलवर जिले सीमा बनाते हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य–

– उत्तर प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 877 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
– उत्तर प्रदेश के साथ राजस्थान के 3 जिले सीमा बनाते हैं–
1. भरतपुर 2. धौलपुर 3. डीग
– उत्तर प्रदेश के दो जिलों की सीमाएँ राजस्थान के साथ लगती हैं– 1. मथुरा 2. आगरा

मध्य प्रदेश राज्य–

– मध्य प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 1,600 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
– **राजस्थान के 10 जिले मध्य प्रदेश के साथ सीमा बनाते हैं–**

1. धौलपुर 2. करौली
3. सवाई माधोपुर 4. कोटा
5. बाराँ 6. झालावाड़
7. चित्तौड़गढ़ 8. भीलवाड़ा
9. प्रतापगढ़ 10. बाँसवाड़ा।

– कोटा मध्य प्रदेश के साथ में दो बार सीमा बनाता है।

गुजरात राज्य–

– गुजरात राज्य राजस्थान के साथ 1,022 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
– गुजरात के साथ राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, जालोर, सिरोही, बाड़मेर जिले सीमा बनाते हैं।
– राज्य के सर्वाधिक निकट स्थित बंदरगाह कांडला बंदरगाह (गुजरात) है।
– राजस्थान के चार ऐसे जिले हैं जो दो–दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैं–

1. हनुमानगढ़ – पंजाब व हरियाणा।
2. डीग – हरियाणा व उत्तर प्रदेश।
3. धौलपुर – उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश।
4. बाँसवाड़ा – मध्य प्रदेश व गुजरात।

– राजस्थान के 2 जिले अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित हैं–

1. श्रीगंगानगर – पाकिस्तान व पंजाब।
2. बाड़मेर – पाकिस्तान व गुजरात।

– कोटा एवं चित्तौड़गढ़ राजस्थान के वे जिले है जो एक ही राज्य के साथ 2 बार सीमा बनाते है।

वर्तमान में राजस्थान में 7 संभाग हैं -

1. जयपुर संभाग 2. जोधपुर संभाग
3. बीकानेर संभाग 4. कोटा संभाग
5. अजमेर संभाग 6. उदयपुर संभाग
7. भरतपुर संभाग

राजस्थान के जिले

- वर्तमान में राजस्थान में 41 जिले हैं।
- राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नये जिलों की घोषणा की है जिससे राजस्थान में जिलों की संख्या 41 हो गयी है।
- एकीकरण के समय सबसे अन्त में सम्मिलित होने वाला जिला अजमेर था, जिसे 26 वें जिले के रूप में मान्यता मिली।
- 27 वाँ जिला धौलपुर 15 अप्रैल, 1982 को बना।
- 28 वाँ जिला बाराँ 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 29 वाँ जिला दौसा 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 30 वाँ जिला राजसमन्द 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 31 वाँ जिला हनुमानगढ़ 12 जुलाई, 1994 को बना।
- 32 वाँ जिला करौली 19 जुलाई, 1997 को बना।
- 33 वाँ जिला प्रतापगढ़ 26 जनवरी, 2008 को बना।

अभ्यास प्रश्न

1. राजस्थान के जिलों में किसकी सीमा पाकिस्तान से नहीं लगती है?
(a) श्रीगंगानगर (b) जोधपुर
(c) जैसलमेर (d) बाड़मेर

2. राजस्थान के बारे में कौन-सा कथन सत्य है?
(a) इसका आकार विषमकोण चतुर्भुज के समान है।
(b) इसका उत्तर से दक्षिण विस्तार 869 किमी. है।
(c) इसकी स्थलीय सीमा 6920 किमी. है।
(d) इसका क्षेत्रफल 3,42,329 वर्ग किमी. है।

3. रेडक्लिफ रेखा का राजस्थान में विस्तार है-
(a) हिन्दुमलकोट (गंगानगर) से बाखासर (बाड़मेर) तक
(b) कोणागाँव (गंगानगर) से शाहगढ़ (जालौर) तक
(c) हिन्दुमलकोट (गंगानगर) से शाहगढ़ (जालौर) तक
(d) कोणागाँव (गंगानगर) से बाखासर (बाड़मेर) तक

4. निम्नलिखित में से किस जिले में अन्तर्राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सीमा दोनों हैं?
(a) हनुमानगढ़ (b) बाड़मेर
(c) जालौर (d) बीकानेर

5. राजस्थान का उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम विस्तार क्रमश: है–
(a) 850 और 784 किलोमीटर
(b) 826 और 784 किलोमीटर
(c) 826 और 869 किलोमीटर
(d) 869 और 850 किलोमीटर

6. निम्नलिखित में से सुमेलित युग्म की पहचान कर सही कूट का चयन करें–
(1) 27वाँ जिला – धौलपुर – 1982
(2) 29वाँ जिला – बाराँ – 1991
(3) 31वाँ जिला – करौली – 1994
(4) 33वाँ जिला – प्रतापगढ़ – 2008
कूट:
(a) 1 और 2 (b) 2, 3 और 4
(c) 1 और 4 (d) 2 और 3

7. राजस्थान की आकृति विषम चतुष्कोणीय/पतंगाकार है। यह सर्वप्रथम किसने बताया?
(a) कर्नल जेम्स टॉड
(b) जसर्ज थॉमस
(c) टी.एच. हैडले
(d) विलियम फ्रेंकलिन

8. निम्नलिखित में से राजस्थान के किन जिलों की सीमा रेखा गुजरात से नहीं मिलती है?
1. सिरोही 2. डूँगरपुर
3. प्रतापगढ़ 4. बाँसवाड़ा
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर की पहचान कीजिए–
(a) 1, 2, 3 तथा 4 (b) 1, 2 तथा 3
(c) 1, 2 तथा 4 (d) केवल 3

9. राजस्थान में निम्नलिखित जिला जो उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश के साथ संयुक्त सीमा निर्धारित करता है–
(a) हनुमानगढ़ (b) भरतपुर
(c) धौलपुर (d) बाँसवाड़ा

10. राजस्थान के उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम विस्तार में अन्तर है-
(a) 41 किमी. (b) 42 किमी.
(c) 40 किमी. (d) 43 किमी.

11. भारत में राजस्थान की भौगोलिक स्थिति है-
(a) उत्तर पश्चिमी भाग (b) दक्षिण पश्चिमी भाग
(c) उत्तर पूर्वी भाग (d) दक्षिण पूर्वी भाग

12. कुल भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से देश में राजस्थान का स्थान है?
(a) प्रथम (b) द्वितीय
(c) तृतीय (d) चतुर्थ

13. निम्न में से राजस्थान के किस जिले की अंतर्राष्ट्रीय सीमा सबसे बड़ी है?
(a) जैसलमेर (b) बीकानेर
(c) बाड़मेर (d) गंगानगर

14. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला है?
(a) मध्य प्रदेश (b) उत्तर प्रदेश
(c) राजस्थान (d) महाराष्ट्र

15. फलोदी जिले का सीमांकन किस जिलों से बनाया गया?
(a) जोधपुर व नागौर
(b) जैसलमेर व बाड़मेर
(c) जोधपुर व बाड़मेर
(d) जोधपुर व जैसलमेर

ANSWER KEY

1. [b]	2. [a]	3. [a]	4. [b]	5. [c]
6. [c]	7. [c]	8. [d]	9. [c]	10.[d]
11. [a]	12. [a]	13. [a]	14. [c]	15.[d]

♦♦♦♦

02 भौतिक स्वरुप एवं विभाजन

- राजस्थान का भू-आकृतिक स्वरूप अर्थात् भू-गर्भिक संरचना एवं उच्चावच (धरातल) अत्यधिक विशिष्ट एवं विविधता से युक्त है।

भौतिक प्रदेश

- राजस्थान के भौतिक प्रदेशों का सर्वप्रथम वर्गीकरण वर्ष 1967 में प्रो. वी.सी. मिश्रा ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान का भूगोल' में किया, जिसका प्रकाशन वर्ष 1968 में नेशनल बुक ट्रस्ट ने किया।
- प्रोफेसर वी. सी. मिश्रा ने राजस्थान राज्य को स्थलाकृति, भौगोलिक स्थिति, कृषि और फसल पैटर्न और कुछ आर्थिक विशेषताओं के आधार पर सात भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया है –

  1. नहरी क्षेत्र 2. पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
  3. अर्द्ध शुष्क क्षेत्र 4. अरावली प्रदेश
  5. पूर्वी कृषि, औद्योगिक प्रदेश 6. दक्षिण–पूर्वी कृषि प्रदेश
  7. चम्बल बीहड़ प्रदेश

- सन् 1971 में डॉ. रामलोचन सिंह ने राजस्थान को भौगोलिक दृष्टि से तीन श्रेणियों में विभक्त किया–

  1. दो वृहत् प्रदेश– अरावली पर्वतीय प्रदेश, दक्षिण–पूर्वी पठारी प्रदेश।
  2. चार उप प्रदेश– पश्चिमी राजस्थान, पश्चिमी मरुस्थल, पूर्वी राजस्थान, पूर्वी मैदान
  3. बारह लघु प्रदेश

- सन् 1994 में डॉ. हरिमोहन सक्सेना ने व प्रो. तिवारी ने "राजस्थान का प्रादेशिक भूगोल" नामक पुस्तक में उच्चावच एवं भौगोलिक संरचना के आधार पर राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में विभाजित किया गया–

  I. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (थार का मरुस्थल)
  II. अरावली पर्वतीय प्रदेश
  III. पूर्वी मैदानी प्रदेश
  IV. दक्षिण–पूर्वी पठारी प्रदेश (हाड़ौती का पठार)

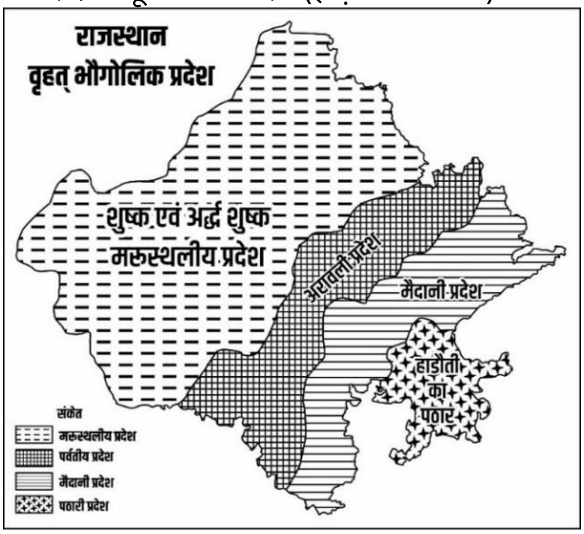

I. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (थार का मरुस्थल) की उत्पत्ति–

- राजस्थान में अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में स्थित विशिष्ट भौगोलिक प्रदेश पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (थार का मरुस्थल) की उत्पत्ति नूतन महाकल्प (नियोजोइक एरा, चतुर्थक युग) के प्लीस्टोसीन काल में टेथिस सागर के अवशेष के रूप में हुई है।
- सर सिरिल फॉक्स तथा बैलेण्ड फोर्ड के अनुसार – टर्शियरी काल (साइनोजोइक एरा– तृतीयक महाकल्प) तक थार का मरुस्थल समुद्र के नीचे था। चतुर्थक महाकल्प के प्लीस्टोसीन काल में समुद्र के निरन्तर पीछे हटने, सूखने, मानवीय क्रियाकलापों जैसे – अतिचारण, निर्वनीकरण, मृदा एवं जल का अनुचित प्रबंधन के कारण मरुस्थलीय दशाओं का विकास हुआ।

थार का मरुस्थल टेथिस सागर का अवशेष है जिसके प्रमाण निम्नलिखित है –

- (i) पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में स्थित खारे पानी की झीलें।
- (ii) टर्शियरी कालीन अवसादी चट्टानों में जीवाश्म खनिज जैसे – कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस के भण्डार।
- (iii) जैसलमेर के कुलधरा गाँव से व्हेल मछली के अवशेष मिले।

थार के मरुस्थल का विस्तार–

- थार रेगिस्तान क्षेत्रफल के हिसाब से दुनिया का 17वां सबसे बड़ा रेगिस्तान है और भारत और पाकिस्तान के मध्य फैला हुआ है।
- थार रेगिस्तान भारत के उत्तर–पश्चिमी राज्यों (हरियाणा, पंजाब, गुजरात और राजस्थान) में फैला हुआ है।
- भारत में थार मरुस्थल का सबसे बड़ा विस्तार राजस्थान में तथा सबसे छोटा विस्तार हरियाणा में है।
- राजस्थान में थार के मरुस्थल का विस्तार राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 61.11% (2,09,042 वर्ग किलोमीटर) है जबकि राजस्थान में मुख्य मरुस्थल 1,75,000 वर्ग किलोमीटर है।
- राजस्थान में थार रेगिस्तान की अक्षांशीय सीमा 25°N और 30°N के बीच स्थित है।
- राजस्थान में थार के मरुस्थल का देशान्तरीय विस्तार $69^0 30'$ पूर्वी देशान्तर से $70^0 45'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है।
- थार रेगिस्तान 640 किलोमीटर लम्बा और 300–360 किलोमीटर चौड़ा है।
- थार रेगिस्तान की समुद्र तल से औसत ऊंचाई 250 मीटर है, जबकि उत्तर पूर्व में औसत ऊंचाई 300 मीटर और दक्षिण की ऊंचाई 150 मीटर है।
- थार रेगिस्तान की ढलान उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर फैली हुई है।

थार के मरुस्थल से संबंधित महत्त्वपूर्ण बिंदू

- **थली –** थार के मरुस्थल का स्थानीय नाम।
- **धोरे–** मरुस्थल में पाई जाने वाली रेतीली बलुई मृदा से निर्मित लहरदार स्थलाकृति को स्थानीय भाषा में धोरे कहा जाता है।
- **लू–** थार के मरुस्थल में ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली गर्म एवं शुष्क पवन, जो स्थानीय गर्म पवन का उदाहरण है।

GENERAL ENGLISH

– verb के रूप से कार्य के जिस समय का बोध होता है, उसे Tense (काल) कहते हैं। Verbs के तीन मुख्य रूप (forms) होते हैं – Present, Past तथा Past Participle. इनके अतिरिक्त Present Participle अर्थात् -ing form तथा Infinitives भी Verb के forms ही कहलाते हैं।

– Verbs के विभिन्न Forms:

– Verbs दो प्रकार (forms) के होते हैं-
(1) Strong Verbs
(2) Weak Verbs.

(1) Strong Verbs

– Group A. वे Verbs Strong Verbs होते हैं जिनके :

(i) Past Participles n, enया ne जोड़कर बनाये जाते हैं। जैसे :

Present	Past	Past
Take	took	taken
Shine	shone	shone

(ii) कुछ verbs के Past Participles बिना कुछ जोड़े बनाये जाते हैं। जैसे :

come	came	come
find	found	found

(2) weak Verbs

– weak Verbs को पाँच भागों में विभक्त किया गया है। जैसे :

(i) वे Verbs जिनका Past Tensed, t या ed लगाकर बनाया जाता है। जैसे :

love	loved	loved
burn	burnt	burnt

(ii) वे Verbs जिनके अन्त में d या t लगाये जाते हैं, पर उनके Vowel sound भी बदल जाते हैं। जैसे :

feel	felt	felt
keep	kept	kept

(iii) वे Verbs जिनके अन्त में d या t लगता है, पर Past में उनका Vowel sound छोटा हो जाता है। जैसे:

feed	fed	fed
meet	met	met

(iv) ऐसे Verbs जिनका अंतिम अक्षर Past व Past Participle में बदल जाता है। जैसे :

send	sent	sent
bend	bent	bent

(v) वे Verbs जिनमें कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे :

put	put	put
shut	shut	shut
cut	cut	cut

– अंग्रेजी में तीन प्रकार के Tense होते हैं:
1. Present Tense (वर्तमान काल)
2. Past Tense (भूतकाल)
3. Future (भविष्यकाल)

– एक ही Tense (काल) में Verb की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को व्यक्त करने के लिए प्रत्येक Tense के चार भेद होते हैं:

– 1. Indefinite
2. Continuous (Progressive)
3. Perfect
4. Perfect Continuous

Present Tense

1. The Present Indefinite (Simple Present) Tense:

– इस Tense का प्रयोग वर्तमान समय में होने वाले कार्य, आदत, सामान्य अथवा शाश्वत सत्य जैसी बातों का उल्लेख करने के लिए होता है एवं वाक्य के अन्त में ता है, ती है, ते हैं आदि शब्द आते हैं। जैसे–

– 1. He plays. वह खेलता है।
2. They play. वे खेलते हैं।
3. I play. मैं खेलता हूँ।
4. The sun rises in the east. सूर्य पूर्व में उगता है।

(A) Affirmative Sentences (स्वीकारात्मकवाक्य):

– **Pattern** – Subject + V1 + s/es ....

1. मैं अपना पाठ याद करता हूँ।
I learn my lesson.
2. सीता एक मधुर गाना गाती है।
Sita sings a sweet song.

Rule 1.

– Singular Number, Third Person chat (He, She, It या कोई एकवचन नाम) के साथ verb में 's' या 'es'लगा देते हैं।

Rule 2.

– Plural Number में Subject (I, We, you, They या कोई बहुवचन नाम) होने पर Verb भी Plural होगा अर्थात् verb में 'S' या 'es'नहीं लगता है।

नोट – Third Person के Singular Subject के साथ प्रयुक्त होने वाले Verbs के साथ निम्नलिखित अंवस्थाओं में -es जोड़ा जाता है।

(a) जिन Verbs के अन्त में 'sh', 'ch', 'o', 'ss', 'x अथवा 'zz' होता है, उनके साथ '-es'लगाते हैं। जैसे:

push	pushes
cross	crosses
watch	watches

(b) यदि Verbs के अन्त में y हो व y के पूर्व consonant (व्यंजन) हो तो y हटाकर -iesलगाते हैं। जैसे:

- worry worries
  try tries

(B) Negative Sentences (नकारात्मक वाक्य):

- **Pattern** – Subject + do/does + not +V1........

1. सीता एक मधुर गाना नहीं गाती है।
   Sita does not sing a sweet song.
2. वे हॉकी नहीं खेलते हैं।
   They do not play hockey.

Rule 1.

- Negative Sentences में एकवचन, third person कर्ता के साथ verb की first form के पहले does not का प्रयोग करते हैं तथा Verb की I form में s/ es नहीं लगाते हैं।

Rule 2.

- बहुवचन noun कर्ता तथा I, you, we और they के साथ do not का प्रयोग करते हैं।

(C) Interrogative Sentences (प्रश्नवाचक वाक्य):

- **Pattern** – Do/Does + subject +V1 ....?

1. क्या वह एक पुस्तक पढ़ता है?
   Does he read a book?
2. क्या मैं तुम्हें एक कलम देता हूँ?
   Do I give you a pen?
3. वह यहाँ क्यों आती है?
   Why does she come here?
4. कौन दूध पसन्द नहीं करता है?
   Who does not like milk?

Rule 1.

- Interrogative sentences में he, she, it और एकवचनं के noun कर्ता के साथ Does वाक्य में Subject (कर्ता) से पहले ले आते हैं। Verb की पहली form लगाते हैं, 's' या 'es'नहीं लगाते हैं।

Rule 2.

- I, we, you, they और बहुवचन noun कर्ता के साथ सबसे पहले Do, फिर कर्ता और फिर verb की पहली form लगाते हैं। पहचान – जब किसी वाक्य में निम्नलिखित Adverbs का प्रयोग हो, तो उसे Present Indefinite या Simple Present Tense समझना चाहिए-
- always, often, sometimes, usually, generally, frequently, seldom, rarely, never, regularly, daily, occasionally.
- every day/ night/month/year etc.
- each day/night/ month/year etc.
- on Sundays/Mondays.......
- in the mornings/evenings etc.
- once/ twice .... a day/week/month etc.

(Present Indefinite Tense) with verb 'write'

Affirmative	Negative	Interrogative	Interrogative Negative
I write.	I do not write.	Does He / She / Ram write.	Does he / she / Ram not write?
We write.	We do not write.	Do we write?	Do we not write?
You write.	You do not write.	Do you write?	Do you not write?
They write.	They do not write.	Do they write?	Do they not write?

2. The Present Continuous

- पहचान – हिन्दी में इस Tense के Sentences में रहा हूँ', 'रही है', 'रहे हैं', 'हुआ है', 'हुई है', 'हुए हैं' आदि शब्द आते हैं। वाक्यों से ज्ञात होता है कि कार्य चल रहा है।
  और पूरा नहीं हुआ है। यह Tense – is /am/are + 'ing form of the Verb से बनता है। जैसे
- I am playing.
- You are playing.

(A) Affirmative (Positive) Sentences

- Pattern – Subject + is/am/are + V1, (ing).....

1. मोहन एक पत्र लिख रहा है।
   Mohan is writing a letter.
2. लड़कियाँ स्कूल जा रही हैं।
   The girls are going to school.

नोट: He, She, Itऔर एकवचन subject के साथ 'is', You, We, They और बहुवचन subject के साथ 'are' एवं I के साथ 'am' लगाकर verb में ingलगाते हैं।

(B) Negative Sentences

- Pattern – Subject + is/am/are + not + V1 (ing).....

1. वह अपनी गुड़िया से नहीं खेल रही है।
   She is not playing with her doll.
2. वे बाजार नहीं जा रहे हैं।
   They are not going to the market.

Rule

- not को is, are, am के ठीक बाद में रखते हैं।

(C) Interrogative Sentences:

- Pattern – Is/Am/Are + Subject + V1 (ing)......?

1. क्या लड़कियाँ कमरे में पढ़ रही हैं?
   Are the girls reading in the room?
2. तुम वहाँ क्यों जा रहे हो? Why are you going there?

- अगर वाक्य के आरम्भ में 'क्या' हो तो Is, Am, Are कर्ता से पहले ले आते हैं और verb में 'ing' लगा देते हैं। अगर हिन्दी के वाक्य के बीच में प्रश्नवाचक शब्द हो तो उसकी अंग्रेजी सबसे पहले लाते हैं फिर is, are, am में से कर्ता के अनुसार लगाकर verb में 'ing' लगाते हैं। पहचान – जब वाक्य में still, in the present time, at this time, at this moment, now-a-days, these days, this evening, now, today, at

present आदि शब्द हों तो वह वाक्य सामान्यतः Present Continuous Tense में होता है ।

3. Present Perfect Tense

- इस Tense के वाक्यों में काम का वर्तमान काल में पूरा हो जाना पाया जाता है और वाक्यों के अन्त में 'चुका है', 'चुकी है', या 'आ है, ई है, ये हैं' आदि शब्द आते हैं।

(A) Affirmative sentences

- **Pattern**-Subject + has/have + V_1.......

1. राम स्कूल जा चुका है / गया है।
   Ram has gone to school.
2. मैंने उसको एक पत्र भेजा है।
   I have sent a letter to him.

नोट:

- He, She, Itऔर एकवचन कर्ता के साथ has और I, You, we, They तथा plural subject के साथ have लगाकर verb की third form लगाते हैं।

(B) Negative Sentences

- **Pattern** – Subject + has/have + not + Obj.

1. मैंने तुम्हारा पत्र नहीं पढ़ा है।
   I have not read your letter.
2. हमने ऐसा जानवर नहीं देखा है।
   We have not seen such an animal.

नोट: Negative sentences में has या have के बाद not लगाते हैं।

(C) Interrogative Sentences

- Pattern – Has/Have + Subject +V_1 ....?

1. क्या उसने अपनी गाय बेच दी है?
   Has he sold his cow?
2. क्या तुमने अपनी पाठ याद कर लिया है?
   Have you learnt your lesson?

पहचान –

- जब किसी Sentence में this week/ month/year etc., just, till now, already, recently, lately, not yet, so far, by now, always, never आदि का प्रयोग किया गया हो, तो वह sentence Present Perfect Tense में होता है ।

4. The Present Perfect Continuous Tense

- ऐसे वाक्य जिनके अन्त में रहा है, रही है, रहे हैं या हुआ है, हुई है आदि शब्द आयें तथा किसी निश्चित या अनिश्चित समय से कार्य प्रारम्भ हुआ है। जैसे-

(i) मैं दो घंटे से पढ़ रहा हूँ।
I have been reading for two hours.

(ii) वह 3 बजे से कार्य कर रहा है।
He has been working since 3 o'clock.

- यह Tense, have been + Verb के 'ing' form से बनता है

(1) He, She, It, Singular Subject (एकवचन कर्ता) के साथ has been तथा I, We, You, They, Plural Subject (बहुवचन कर्ता) के साथ have been का प्रयोग होता है

- Pattern – Subject + has/have + been + V_1 (ing) .... since/for + time

(2) Negative Sentences में not का प्रयोग has/ have और been के मध्य होता है। जैसे–

- He has not been living in this house for four years.

(3) Interrogative Sentences में has तथा have का प्रयोग Subject के पहले होता है तथा वाक्य के अन्त में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) का प्रयोग किया जाता है।

- जैसे- Hope you been learning your lesson for two hours?

1. इस Tense का प्रयोग ऐसे कार्य के लिए होता है, जो भूतकाल में किसी समय पर आरम्भ हुआ हो और अब भी जारी हो। इस Tense में since/for/all के साथ समय अवश्य ही दिया होता है। यदि समय नहीं दिया होता है, तो sentence, Present Continuous Tense में माना जाता है। जैसे-

(i) It is raining.
वर्षा हो रही है।
(Present Continuous Tense)

(ii) It has been raining for two hours.
दो घंटे से वर्षा हो रही है।
(Present Perfect Continuous Tense)

2. Present Continuous यह दर्शाता है कि कोई काम लगातार चल रहा है जबकि Present Perfect Continuous यह दर्शाता है कि काम किसी भूतकालीन समय से अभी तक चल रहा है।

Past Tense

1. Past Indefinite Tense (Simple Past)

- इस Tense के वाक्यों में काम का करना या होना भूतकाल में पाया जाता है।
- ऐसे वाक्यों के अन्त में 'आ', 'या', 'ई', 'ये', 'या', 'ता था', 'ते थे', 'ती थी' आदि आते हैं।

(A) Affirmative Sentences

- **Pattern** – Subject + V_2 ....

1. उसने कल मुझे एक कलम दिया।
   He gave me a pen yesterday.
2. मैं इस घर में रहता था।
   I lived in this house.

नोट:

- एकवचन तथा बहुवचन दोनों में ही Subject के साथ verb की second form आती है। Subject के भिन्न-भिन्न Number या Person के साथ verb में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

(B) Negative Sentences

- Pattern – Subject + did not + V_1 ....

1. वह कल हॉकी नहीं खेला।
   He did not play hockey yesterday.
2. लड़कों ने अपना पाठ याद नहीं किया।
   The boys did not learn their lesson.

नोट:

– Negative sentences में प्रत्येक कर्ता के बाद में did not लगाकर verb की first form लगाते हैं।

(C) Interrogative Sentences

– **Pattern** – Did + Subject + V1 ....?

1. क्या तुम स्कूल गये थे?
   Did you go to school?
2. तुम्हारा भाई कल कहाँ गया?
   Where did your brother go yesterday?

नोट:

– प्रश्नवाचक वाक्यों में Did कर्ता से पहले लगाते हैं और verb की first form लगाते हैं।

पहचान –

– इस प्रकार के वाक्यों में निम्नलिखित Adverbials का प्रयोग किया जाता है-
last night, last year, last month, last week, long ago, some time back, yesterday, once, in 2015 इत्यादि।

2. Past Continuous Tense

– ऐसे वाक्यों में काम का जारी रहना भूतकाल में पाया जाता है। वाक्य के अन्त में रहा था', 'रही थी', 'रहे थे' या 'हुआ था', 'हुई थी', 'हुए थे' पाया जाता है।

(A) Affirmative Sentences

– **Pattern -** Subject + was/were + V_1 (ing) ....

1. मैं अपनी किताब पढ़ रहा था।
   I was reading my book.
2. हम अपना पाठ याद कर रहे थे।
   We were learning our lesson.

– He, She, It, I और एकवचन noun subject के साथ was तथा You, we, they और बहुवचन noun subject के साथ were का प्रयोग कर verb में 'ing' लगाते हैं।

(B) Negative Sentences

– **Pattern** – Subject + was/were + not + V_1 (ing) ...

1. वे घर नहीं जा रहे थे।
   They were not going home.
2. राम दीवार से नहीं कूद रहा था।
   Ram was not jumping over the wall.

Rule –

– Negative sentences मैं was/were के पश्चात् not लगा देते हैं।

(C) Interrogative Sentences

– **Pattern** – Was/Were + Subject + V_1 (ing) ....?

1. क्या हम बाजार जा रहे थे?
   Were we going to the market?
2. किसान अपना खेत क्यों नहीं जोत रहा था?
   Why was the farmer not ploughing his field?

– Interrogative sentences में Was या Were कर्ता से पहले लगाते हैं और verb में 'ing' लगा देते हैं।

– यदि वाक्य के बीच में प्रश्नसूचक शब्द 'क्यों', 'क्या', 'कब', 'कहाँ', 'कैसे' आदि में से कोई दिया हो तो सबसे पहले उसकी अंग्रेजी लगाकर फिर was या were को लगाते हैं।

पहचान :

– इस प्रकार के वाक्यों की कोई विशिष्ट पहचान नहीं होती, परन्तु इन वाक्यों में at that time, at that moment, those days, then जैसे Adverbials आते हैं। इसी प्रकार while से जुड़े दो वाक्यों में से यदि एक वाक्य Past Continuous में हो तो दूसरा भी इसी Tense में मानना चाहिए।

3. Past Perfect Tense

– 1. इस Tense के वाक्यों में भूतकाल में किसी कार्य का निश्चित अवधि से पहले समाप्त हो जाना पाया जाता है। अथवा दो कार्य भूतकाल में समाप्त होते हैं, एक पहले तथा दूसरा बाद में।

– 2. इन वाक्यों के अन्त में साधरणतया 'चुका था', 'चुकी थी', 'चुके थे', 'या था', 'ये थे' आदि शब्द आते है।

(A) Affirmative (Positive) sentences

– **Pattern** – Subject + had + V_1 ....

1. वर्षा होने से पहले हम घर पहुँच चुके थे।
   We had reached home before it rained.
2. मेरे स्टेशन पहुँचने से पहले गाड़ी छूट चुकी थी।
   The train had started before I reached the station.

Rule 1

– एकवचन तथा बहुवचन कर्ता दोनों के साथ 'had' लगाकर verb की third form लगाते हैं।

Rule 2

– जिन वाक्यों में दो कार्य भूतकाल में पाये जायें उनमें से जो काम पहले समाप्त हो चुका हो उसको Past Perfect Tense में अर्थात् कर्ता, फिर had, इसके बाद क्रिया की third form लगाते हैं और जो कार्य बाद में हुआ हो उसको Past Indefinite में बनाते हैं अर्थात् सबसे पहले कर्ता और फिर verb की second form लगाते हैं।

(B) Negative sentences

– Pattern-Subject + had + not + V_1 ....

1. मैंने यह घर पहले नहीं देखा था।
   I had not seen this house before.
2. डॉक्टर के आने से पहले मरीज मरा नहीं था।
   The patient had not died before the doctor came

Rule

– Negative sentences में had के आगे not का प्रयोग करते हैं।

(C) Interrogative Sentences

– **Pattern** – Had + Subject + V_1 ....?

1. क्या मेरे स्कूल पहुँचने से पहुले घण्टा बज चुका था?
   Had the bell rung before Freached school?

विज्ञापन

मुश्किल परीक्षाऐं भी आसान लगेगी
जब तैयारी होगी लक्ष्य के साथ

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

राजस्थान
हाई कोर्ट
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
9, जून 2025 को जारी विज्ञप्ति के अनुसार

5670 पदों पर भर्ती

राजस्थान
चतुर्थ श्रेणी
कर्मचारी चयन भर्ती परीक्षा

53749 पदों पर भर्ती

- COURSE OFFERED -

- NOTES WITH LIVE FROM CLASSROOM BATCH
- MCQ BASED BATCH
- TASK BASED TEST SERIES
- NOTES WITH RECORDED BATCH
- OFFLINE CLASSROOM BATCH

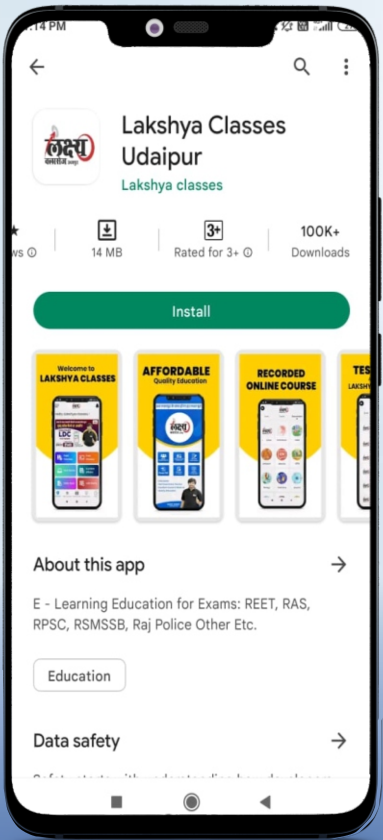

क्यों हैं लक्ष्य क्लासेज विशेष?

- व्यापक अध्ययन सामग्री
- MCQ की बुकलेट
- नियमित टेस्ट सीरीज
- पूर्णत: समर्पित यूट्यूब चैनल
- लाइब्रेरी सुविधा
- अनुभवी एवं योग्य फैकल्टी
- सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम
- ऑनलाइन एप्लीकेशन एक्सेस
- मासिक करंट अफेयर्स मैगज़ीन
- नियमित काउंसलिंग

MRP : ₹640

Scan to Download Lakshya App Now

Google play

INSTAGRAM FACEBOOK YOUTUBE TELEGRAM

S. No. : AP0006

CODE : APGC

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™

M. 6376957258, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur